भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902
डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 8 | अंक 04 | उदयपुर बुधवार 01 मार्च 2023 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

अवचेतन की यात्रा के सहचर

- डॉ. कुंजन आचार्य -

मुझे लगा कि मुझे एक ऐसे शख्स के बारे में बताया जा रहा है जिसको मैं बरसों से जानता हूं लेकिन इस विषय के ज्ञाता हैं, यह मुझे नहीं पता था। मैं बिना समय गंवाए उनसे मुलाकात करने उनके घर पहुंच गया। उन्होंने कहा कि मैं बरसों से जिस कुंजन को जानता हूं वह तो उससे बिल्कुल अलग है। ऐसा कुंजन जिसके बारे में कभी सोचा भी ना था।

प्रख्यात लोककलाविद् डॉ. महेन्द्र भानावत एक ऐसे जिन्दादिल इंसान हैं जिनकी उपस्थिति मेरे जीवन में करीब तीन दशक से है। वे एक मस्त मौला और बिंदास व्यक्तिव के स्वामी हैं। उनसे हर बार मिलना एक उत्सव जैसा होता है। उनकी कई चीजें, कई बातें हर बार मिलने पर नई जैसी दिखाई पड़ती हैं। हालांकि मैं उनसे उम्र में आधा हूं लेकिन हमारी मित्रता समान उम्र वाली है। हम दोनों की कुछ बातें एकदम समानार्थक सी हैं।

पिछले दिनों उनसे हुई मुलाकात में बात-बात में अचानक ध्यान और पारलौकिक बातों का जिक्र आया। मैं ध्यान का अभ्यास पिछले दो दशक से कर रहा हूं। शुद्धत: अपने आनन्द के लिए कर रहा हूं। इसका जिक्र भी कम लोगों से ही करता हूं या जो इसको समझते हैं उन्हीं से करता हूं। पिछले कुछ वर्षों में जब से त्राटक का अभ्यास शुरू किया तो कई सारे बदलाव जीवन में आए। इस दौरान पारलौकिक संसार के प्रति जिज्ञासा बलवती होती चली गई और अधिक जानने के लिए मैंने विभिन्न प्रकार के साहित्य पढ़े। यूट्यूब पर उपलब्ध वीडियोज देखे और इस क्षेत्र में काम करने वाले कई मित्रों से चर्चा भी की।

इसी दौरान मेरे एक मित्र ने कहा कि उदयपुर में डॉ. महेन्द्र भानावत को अगर जानते हो तो उनसे मिलो। वे इस क्षेत्र में बहुत काम कर चुके हैं। मुझे लगा कि मुझे एक ऐसे शख्स के बारे में बताया जा रहा है जिसको मैं बरसों से जानता हूं लेकिन इस विषय के ज्ञाता हैं, यह मुझे नहीं पता था। मैं बिना समय गंवाए उनसे मुलाकात करने उनके घर पहुंच गया।

बातों-बातों में हम इतने खो गए कि पता ही नहीं चला कि मुलाकात 5 घंटे से अधिक की हो गई। उन्होंने उनके पारलौकिक विषयों पर रूचि और कामकाज के बारे में विस्तार से बातचीत की। इसके साथ ही मैंने भी अपने कुछ अनुभवों का जिक्र किया तो वे भी सुन कर आश्चर्यचकित रह गए। उन्होंने कहा कि मैं बरसों से जिस कुंजन को जानता हूं वह तो उससे बिल्कुल अलग है। ऐसा कुंजन जिसके बारे में कभी सोचा भी ना था। डॉ. महेन्द्र भानावत आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता से भर गए।

डॉ. कुंजन आचार्य

हालांकि करीब तीन दशक पूर्व उनकी 'निर्भय मीरां' पुस्तक के विमोचन समारोह में मैं मौजूद था और वहां उनके द्वारा अभिव्यक्त किए गए अनुभव का साक्षी भी रहा था लेकिन तब मेरी समझ इतनी व्यापक नहीं थी इसलिए उन अनुभवों तक गहराई से नहीं पहुंच पाया। धर्मयुग में अस्सी के दशक में छपा डॉ. भानावतजी का एक आलेख पूरे देश में चर्चित रहा। बहुत पसंद किया गया। शायद मेरे मित्र ने भी उसी आलेख के सन्दर्भ में उनका जिक्र मेरी मुलाकात के लिए किया।

उस आलेख का शीर्षक था भूतों का मेला। मैंने डॉ. भानावतजी से पूछा कि क्या आप वाकई भूतों के मेले में शामिल हुए थे तो उन्होंने बेबाक ढंग से बताया कि उन्होंने अपनी आंखों से भूतों का मेला देखा। यह सब कल्लाजी राठौड़ की कृपा से हुआ जोकि लोकदेवता के रूप में पूरे मेवाड़ में पूजे जाते हैं। उन्होंने बताया कि देश में कल्लाजी राठौड़ की गदियां कई जगह हैं और उनके अनुयायी भी बड़ी संख्या में हैं। वे कल्लाजी के भोपाजी सेवक सरजुदासजी के साथ चित्तौड़ किले पर दीपावली की रात को भूतों का मेला देखने पहुंचे थे।

डॉ. भानावतजी ने बताया उन्होंने अपनी आंखों से सारा नजारा देखा जो शायद आम आदमी के लिए कतई सम्भव नहीं है। इस अवसर के खींचे गए फोटो में से एक भी स्पष्ट नहीं आया। शायद यही कारण रहता है कि हम पारलौकिक जीवन में जिन आत्माओं को देखते सुनते हैं उनको कैमरे में कैद करना सम्भव नहीं होता। इस तरह के अनुभवों में हमें साक्ष्य उपलब्ध होते हैं लेकिन डॉ. भानावतजी के अनुभव इनको सिद्ध करते हैं।

उन्होंने बताया कि चित्तौड़ से निकल अपने भ्रमण के दौरान मीरां ने जहां-जहां निवास किया उन स्थानों को खोजते-खोजते वे हर उस स्थान पर गए जहां पर मीरां ने अपना समय व्यतीत किया था। इस दौरान बेहद रोमांचक अनुभव हुए जो उन्होंने अपनी पुस्तक में शामिल किए। यह सब भी कल्लाजी की कृपा से ही सम्भव हुआ। वे गुजरात की उन गुफाओं में भी गए जहां मीरां के होने की किंवदन्तियां प्रचलित हैं। वहां उनकी एक ऐसे व्यक्ति से मुलाकात भी हुई जिसकी आयु का कोई अन्दाजा नहीं लगा सकता। उसने सिर्फ एक पंक्ति में जवाब दिया, 'हां यहां मीरां आई थी।' सात फीट के उस व्यक्ति का भी फोटो लिया लेकिन जब रिल धुल कर आई तो फोटो ब्लेंक था।

डॉ. भानावत साहब से मेरा परिचय कक्षा 11वीं में हुआ था। तब मैं 15 साल का था। मैं चेतक सर्कल स्थित राजकीय गुरुगोविन्द स्कूल में पढ़ता था जिसको लोग लम्बरदार स्कूल कहते हैं। मध्यांतर के दौरान पास ही स्थित डॉ. भानावतजी के मंगल मुद्रण पर उनसे मिलने जाया करता था। तब वे दैनिक हिन्दुस्तान के संवाददाता थे और दैनिक जय राजस्थान में चलते-चलते कॉलम लिखते थे। मेरी पत्रकारिता में रुचि के कारण ही मैं उनसे प्राय: उनसे मिलता रहता था। उसके बाद से गहरी मित्रता या यूं कहें कि अपनापन बढ़ता ही चला गया।

जब मैंने उन्हें अपनी ध्यान, मेडिटेशन और त्राटक की यात्रा के बारे में बताया तो वे विस्मित रह गए। मैंने उन्हें अपने विभिन्न अनुभवों से रू-ब-रू करवाया। किस्से सुनाए तो उन्होंने चकित होकर कहा, 'तुम मुझ से थोड़ा आगे निकल गए हो। मैंने जो यात्राएं की हैं वे कल्लाजी के संरक्षण में की हैं जबकि तुमने इन सबको बिना किसी की मदद के स्वयं सिद्ध किया है।'

लोककलाओं और लोकसंस्कृतियों पर डॉ. भानावतजी की ढेरों पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं और उनकी छवि एक लोककलामर्मज्ञ के रूप में प्रतिष्ठित हुई है लेकिन वे पारलौकिक दुनिया के बारे में भी जानते हैं, समझते हैं और उससे कई बार रू-ब-रू हुए हैं। यह बात बहुत कम लोग जानते हैं। इस मुलाकात के बाद डॉ. भानावतजी ने मुझसे आग्रह किया कि मैं उनसे मिलता रहूं और इस विषय पर अपने अनुभव साझा करता रहूं।

मेरे अनुभव में ज्योतिषीय विश्लेषण, मेडिटेशन और इससे जुड़े विविध अनुभवों का मिश्रण था लेकिन कुल मिलाकर वह किसी घटना या किसी जीवित या मृत व्यक्ति के बारे में निष्कर्ष पर पहुंचने में समग्र तौर पर मददगार होता है। हालांकि मैं तो साधक हूं।

अध्यापन और गृहस्थ जीवन की जिम्मेदारियां निभाने के बाद जिज्ञासा भरी दृष्टि से अध्ययन और मनन करता रहता हूं और नई चीजों को खोजने के लिए अनुभवी लोगों से चर्चा-विमर्श भी करता रहता हूं। कुल मिलाकर चेतन और अवचेतन की यात्रा में अवचेतन को जाग्रत करके अनुभव में नई बातें जोड़ता हूं। डॉ. भानावतजी से यह मुलाकात अविस्मरणीय रही और आशा है कि भविष्य में भी दोनों सुधी जिज्ञासु व्यक्ति इस विषय पर चर्चा और अनुभवों को साझा करते रहेंगे।

- लेखक के संपर्क नं. : 93527 27209

पूर्व राजपरिवार के राजनीति में जुड़ाव की सुगबुगाहट तेज

मेवाड़ के पूर्व राजपरिवार के राजनीति में जुड़ाव की सुगबुगाहट पिछले कुछ समय से निरन्तर सुनने को मिल रही थी किन्तु भाजपा के कद्दावर नेता गुलाबचन्द कटारिया के असम के राज्यपाल बनते ही प्रदेश स्तरीय राजनैतिक हलचल और तेज होती लग रही है।

ऐसे में उदयपुर विधानसभा के लिए जहां कई दावेदार मुंहबायें खड़े हैं वहीं मेवाड़ के पूर्व राजपरिवार के लक्ष्यराजसिंह का नाम अधिक चर्चित हुआ किसी खास हलचल की दस्तक देता प्रतीत हो रहा है।

एक मंजे हुए कद्दावर नेता के रूप में कटारियाजी लम्बे समय से विधायक के रूप में उदयपुर शहर का पूरजोर प्रतिनिधित्व कर रहे थे। प्रतिपक्ष के नेता के रूप में भी उनकी भूमिका सराही जा रही थी। कुछ महीनों से एक-के-बाद-एक करके बीजेपी के नेताओं का उदयपुर आना और राजमहल में लक्ष्यराजसिंह से भेंट करने की खबरें भी लगातार कुछ नया संकेत दे रही थीं।

लक्ष्यराजसिंह मेवाड़

बीजेपी के बड़े नेताओं में प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनिया के अलावा केन्द्रीय मंत्रियों में अर्जुनराम मेघवाल, डॉ. संजीव बालियान, गजेन्द्रसिंह शेखावत तथा राज्यमंत्री एस. पी. बघेल की समय-समय पर लक्ष्यराजसिंह से हुई मुलाकातें भी बड़ा मायना रखती हैं। मुख्यमंत्री के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने वाले योगी आदित्यनाथ से राजधानी लखनऊ में मुलाकात कर लक्ष्यराजसिंह ने तो उन्हें मेवाड़ आने का निमंत्रण भी दिया।

इन सबके बावजूद लक्ष्यराजसिंह की मेवाड़ की आम जनता के बीच आवाजाही भी लगातार बढ़त लिए सक्रिय रही। इससे उनका राजनीति में आने के प्रभावी संकेत ही हैं।

यह अलग बात है कि लक्ष्यराजसिंह भी इन मुलाकातों को शिष्टाचार मुलाकातें बता रहे हैं और राजनेता भी कोई संकेत नहीं दे रहे हैं। नकारात्मक तथा सकारात्मक दोनों परिस्थितियों में समभावी बने रहना भी सफल राजनीति का श्रेष्ठत्व कहा गया है।

- डॉ. तुक्तक भानावत

साफे के पल्लू में बंधी कविता-पंक्ति

-नंद चतुर्वेदी-

आलम उत्तरप्रदेश के किसी गांव के कवि थे। आलम होने के पूर्व वे ब्राह्मण थे। जिस मोहल्ले में वे रहते थे उसी में शेख नाम की एक रंगरेजन थी।

कहते हैं कि वह भी कवयित्री थी। एकबार कवि आलम ने अपना साफा रंगने के लिए शेख को दिया। इसके एक छोर पर कुछ चीज बंधी है, ऐसा रंगरेजन शेख को लगा। जिज्ञासावश उसने उस साफे के पल्लू को खोला। उसमें एक कागज मिला जिस पर दोहे की एक पंक्ति लिखी थी-

कनक छरी सी कामिनी, काहे को कटि छीन।

संभवतः दूसरी उपयुक्त पंक्ति न पाने के कारण आलम ने इसे कभी पूरी करने के लिए साफे के छोर में बांध दी हो। जब यह

पंक्ति शेख रंगरेजन को मिली तो वह पुलकित हो गई और कई तरह के विचारों में खो गई। अंत में उसने अपनी ओर से एक पंक्ति लिख कर उसे पूरा किया। वह पंक्ति थी-

कटि को कंचन काटिके, कुचन मध्य धर दीन।

दोहा पूरा होने पर उसने फिर उसी साफे के पल्लू में बांध दिया। बहुत दिनों बाद आलम को उस दोहे की पूर्ति करने का स्मरण आया। उसने जब उस साफे का पल्लू खोला तो उसके हर्ष और आश्चर्य की कोई सीमा न रही कि वह दोहा पूरा कर दिया गया है। पता करने पर उसे विदित हुआ कि रंगरेजन शेख कवयित्री भी हैं और उन्होंने उस एक पंक्ति को इस तरह पूरी कर दोहा बना दिया है।

किंवदन्ती के अनुसार बाद में दोनों प्रतिभावान कवि-कवयित्री दाम्पत्य-सूत्र में बंध गये। यही ब्राह्मण कवि आलम नाम से ख्यात हुए। झालावाड़ के राजकवि कवीन्द्र हरनाथ ने इसी बात को रसमय ढंग से इस तरह लिखा -

जो कुछ कंचन के कहे (तो) मुख कारो क्यों कीन?

अमृत कलश भरायके मदन मोहर कर दीन।।

साहित्य में ऐसे उदाहरण और ऐसी ठिठोली खोजने पर भी बमुश्किल मिल सकेगी।

किशना के किस्से

- डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना -

किशना से आप मिले? नहीं मिले तो अच्छा है, अब कभी मिल लेना। वाह! क्या आदमी है! बातों की करामात करते हैं। दुबले-पतले, सुन्दर चेहरा, मधुर स्वर, जानदार-शानदार गला। बोलते हैं तो फुलझड़ियां छूटती हैं। गुलाब के फूल बरसते हैं। कभी-कभी कांटे-पत्तियां भी। नाना कोड़के को भी पीछे छोड़ते हैं। द्विअर्थी कथन मामूली बात है। मेरे बहुत अच्छे मित्र हैं। इस उम्र में फोन से ज्यादा काम चलाते हैं। सालों गायब। अकस्मात प्रकट हो जाते हैं।

डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना

आज सुबह की ही बात है। सुबह-सुबह ही दर्शन हो गए। 'अरे किशनाजी आप! मेरे घर के दरवाजे पर कहा। यह क्या? आंखें लाल, अस्त-व्यस्त बिखरे केश। यह क्या हाल बना रखा है।' बोले-'अन्दर चलो। चाय पीयूंगा और फिर जोर से हाक लगाई-भाभी चाय पिलाना। नाश्ता भी करूँगा। रात को अच्छी तरह नींद नहीं आई। पेट में पुराना किस्सा उमड़-घुमड़ कर रहा था। सोचा तुम्हें ही बता दूं।'

मैं बोला- किशना भाई! पेट बहुत खराब है जो तो टायलेट हो आओ। आंखें तरेर कर किशना बोले-तुम्हारी अकल के दरवाजे बन्द हैं क्या? सुनो पुराना किस्सा है।

उन्होंने सोफे पर आलकीपालकी मारी। चाय का कप छिना, बिस्कुट खाते चाय पीते बोले- आपको ध्यान होगा कि राजमहल के बाहर मुख्य दरवाजे के बाजू में पं. भवानीशंकरजी की चक्की थी। उन्होंने मकान का पुनरूद्धार कराया था। उदयपुर के प्रमुख कवियों को बुलाकर कवि गोष्ठी कराने की सूचना दी। गोष्ठी के बाद प्रसाद भी था। दुर्भाग्य से मैं भी उसमें था। क्रन्दन, सौरभ, भगवती आदि भी लपेटे में आ गए। हम रात 8 बजे पहुंचे। तहखाने में व्यवस्था की।

नसैनी लगाकर हम सभी नीचे उतरे। मां सरस्वती के आगे दीपक व अगरबत्ती जलादीं। उस तहखाने में धुंआ फैल रहा था। पंडितजी ने नसैनी खींच ली थी। बाहर निकलने का रास्ता भी बन्द। उधर हमारे कवि भाई डायरियां खोल खांसते-खांसते कविता सुना रहे थे। लगभग 10 बजे ऊपर से पंडितजी की आवाज आई- चाय-पानी छींके से भेज रहा हूं। फिर छींका आया जिसमें चाय थी फिर पानी। क्रन्दन तो क्रन्दन करने लगा। आखिर प्रभु तथा पंडितजी की कृपा से 11.30 बजे गोष्ठी खत्म हुई।

नसैनी लगी और हम बाहर। बाहर पंडितजी दोने में प्रसाद लिए खड़े थे। मैंने कहा- पंडितजी यह तो.... भोजन की व्यवस्था किधर है? वे बोले- भोजन की तो कही नहीं थी। हां, प्रसाद की कहा जो यह है। हम एक-दूसरे की शक्ल देखने लगे। घर पर भोजन के लिए मना कर आए थे अब किस मुंह से कहेंगे। पंडितजी तो बहुत कंजूस निकले। दरवाजा बन्द कर चले गये।

अरे भाई! पीटे हुए सौरभ के साथ आए। सौरभ ने घर पर डरते-डरते पूछा- रोटी-वोटी है क्या? वहां व्यवस्था नहीं थी। भाभी ने कटोरदान देखा- हमारे सौभाग्य से तीन रोटियां थीं। हम दोनों ने खाई। मैंने सौरभ की पत्नी से कहा- भाभीजी धन्यवाद। रोटी मिल गई। वे सहज भाव से बोली- आपने खाली तो अच्छा हुआ नहीं तो सुबह बासी रोटी कुत्ते को डालनी पड़ती। उनका यह कहना था कि मुझे लगा कहीं मैं भौंकने नहीं लग जाऊं। यह भभीजी की सहजता थी। खैर घर गया और चुपचाप सो गया।

किसना भाई की बात पर मुझे भी कुछ याद आया। सभी की पत्नियां सहज और सीधी ही होती हैं। मैं बोला- किसनाजी आपको याद होगा। मैं तथा शिवजी आपके सौभागपुरा के नवनिर्मत मकान पर आये थे। उस समय यह क्षेत्र सुनसान था। उस ओर एक-दो मकान बने थे। अब तो यह पाश-एरिया है। मैंने घर में घूसते ही कहा था- वाह बधाई। नये घर की। पर सुनसान क्षेत्र में रात को डर लगता होगा। किसन भाई की पत्नी, हमारी भाभी तत्काल बोली- नहीं डर कैया? मैंने कहा- यहां कुत्ता सुरक्षा के लिए रखना पड़ेगा। इस पर भभीजी सहजता से बोली- ये है न, कुत्ते की क्या जरूरत? उनकी सहजता पर हम हंस दिये।

किसना बोले- अरे! अरे!! तुमने तो मुझे कुत्ता ही बना दिया। मैंने कहा- भाई! यह सरलार्थ है। इसमें लक्षणा मत ढूंढो। हंसी-मजाक चलती रही। इसी बीच किसना बोले-सुनो! एक किस्सा सुनाता हूं। कुछ दिनों पूर्व मैं तेजाजी भाई साहब के यहां गया था। वे अपनी पत्नी को बता रहे थे कि आज आफिस से आते समय गली में बड़ा सा डरावना कुत्ता मिल गया। इस बीच उनका बेटा चिल्लाया- मम्मी! बहिन ने मेरी कॉपी फाड़ दी। मम्मी ने पूछा- फिर! मैं डरकर तेज भागा तो वह कुत्ता भौंका। इस बीच उनकी पुत्री बोली-मम्मी! भैय्या ने मेरी पेंसिल छिन ली। तेजा की पत्नी ने बच्चों को डांटते हुए कहा- चुप रहो कुछ देर; पहले मुझे कुत्ते की पूरी बात सुन लेने दो। इतना सुनते ही तेजा भाई साहब की शक्ल देखने काबिल थी। मैं तेजाजी से फिर आऊंगा, कह वहां से नौ दो ग्यारह हो गया।

किसना के पिटारे में बहुत किस्से हैं। वे कब क्या कहेंगे, कुछ पता नहीं। कहेंगे क्या और करेंगे क्या, यह उनके अलावा कोई नहीं जानता। मैंने उनसे पूछा- पेट हल्का हुआ या नहीं। वे संतुष्टि भाव से बोले- अब ठीक है। तुम अच्छे दोस्त हो जो आकर मिल लेता हूं। अब दो-चार दोस्त ही हैं। जिनसे बतरस का आनन्द लिया जा सकता है। दोस्तों का भी अकाल हो रहा है। कोरोना का रोना और उम्र दोनों के कारण मटरगस्ती भी बन्द हो गई है। मैंने कहा- तुम सही कह रहे हो। वे उठे, अपने बालों को झटका दिया व झोला उठाकर चल दिये।

किसना प्यारे दोस्त हैं। उनके कई किस्से हैं। फिर कभी- होली का नमस्कार।

कविता का खटका, कवियों का लटका

उदयपुर (ह. सं.)। विजयनगर के हास्य विजीत खरे कवि डॉ. खटका राजस्थानी ने 17 फरवरी को डॉ. महेन्द्र भानावत का द्वार खटखटाते अपनी अल्हड़ उपस्थिति दी। उनके साथ उनके भाई प्रकाश भी थे।

डॉ. खटका, डॉ. भानावत, प्रकाश

आज के कवियों की कविता और बीते कवियों को लेकर शुरू हुई बातचीत का निकष यह रहा कि तब की कविता कविता होती थी जब कवियों की भावाभिव्यक्ति के साथ-साथ श्रोता भी उमड़घुमड़ करता था। आज के कवि उससे उलट अपनी अ-गंभीर उपस्थिति का हास्य बदन अधिक करते हैं। तब श्रोता का प्रमुख अंग कर्ण होता था जो प्रिय से प्रियतर सुनता आत्मगुंजन देता था जबकि आज का प्रमुख अंग हाथ की हथेली रह गया है जिसे बार-बार बजाने का आग्रह उसी तरह का मजा देता है जैसे सड़क चलते लगनेवाला जाम। बहरहाल इस महफिल का लुत्फ डॉ. कहानी और जितेन्द्र मेहता ने भी खूब लिया।

उल्लेखनीय है कि डॉ. खटका राजस्थानी पिछले पांच दशक से कविता का जाला बनुते आ रहे हैं। वह समय याद करते भी वे अपनी बात-की-बात की बारात बनाते अनेक गुजर बुजुर्ग काव्यधरों को याद करते भी ठहाके का गंठा लगाते रहे और शैलेश लोढ़ा की हास्य चौपाल के संस्मरण भी सुनाते रहे।

– कवि खटका के संपर्क नं. 7014308650

मीरां की याद लिए आत्मीय सफर

उदयपुर (ह. सं.)। वाराणसी के प्रख्यात लेखक डॉ. छेदीलाल कांस्यकार ने 26 फरवरी को डॉ. महेन्द्र भानावत से भेंट की। वे यहां अपनी धर्मपत्नी तथा दोनों सुपुत्रों के साथ उदयपुर दर्शन के लिए आये।

डॉ. छेदीलाल औरंगाबाद के स. सिन्हा कॉलेज में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त हैं। उनका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य बनारस की रामलीला के 500 वर्ष से सम्बन्धित शोधग्रन्थ है। अनेक प्रामाणिक शोधपरक सन्दर्भो सहित यह ग्रंथ रामलीला के विविध रूपा प्रदर्शनों के साथ गोस्वामी तुलसीदास द्वारा प्रवर्तित रामलीला पर बड़ा विशद विश्लेषण लिए है।

अपने डेढ़ घण्टे की विद्वतापूर्ण भेंट में डॉ. छेदीलाल ने राजस्थान की शौर्यमय ऐतिहासिक भूमि, शूरवीर, वीरांगनाओं के साथ ही जौहर, रानी पद्मिनी और प्रमुखतः मीरांबाई की जीवनी, उसका चित्तौड़ से निर्वासन और विविध स्थान-प्रान्तों की भ्रमण-यात्रा से लेकर समुद्र समर्पण तक की अनेक रहस्यमय जानकारियों से साश्चर्य अपने को समृद्ध किया।

विद्वानों द्वारा स्थापित पूर्व प्रचलित धारणाओं की बजाय मीरां द्वारा कृष्ण मूर्ति की जगह शालिग्राम पूजन, पद-रचना नहीं करने तथा इतिहास प्रसिद्ध जोधाबाई की पुत्री होने जैसी बातों पर गम्भीरतापूर्वक वैचारिक मंथन करते डॉ. भानावत द्वारा लिखित 'निर्भय मीरां' को पढ़ने की जिज्ञासा व्यक्त की किन्तु उसकी उपलब्धि नहीं होने पर पुनर्प्रकाशन की आवश्यकता बताई।

डॉ. छेदीलाल के संपर्क नं. 9934971550

स्मृतियों के शिखर (159) : डॉ. महेन्द्र भानावत

उफनती नदी में मौत के फनकार डॉ. भगवानदास पटेल

गुजरात के आदिवासियों के सम्माननीय लेखक डॉ. भगवानदास पटेल अत्यन्त साधारण होकर अपने सहजमना शिक्षक जीवन को जीते असाधारण अलमबरदार ही हो गये हैं। उनसे मेरा मिलना तो बहुत बाद में हुआ परन्तु परिचय तो पहले से था। ऐसे और भी कई मित्र-बड़ेरे हैं। ऐसे भी हैं जिनसे कभी मिलना ही नहीं हुआ मगर पत्राचार के माध्यम से जो आत्मीयता रही, वह अद्भुत अवर्णनीय ही रही।

बहरहाल डॉ. पटेल से मेरी मिलनी 1994 के वर्षान्त में हुई जब जानेमाने जमीनी कलाकार देवीलाल सामर भारतीय लोककला मण्डल को सूना कर परम हो गये थे और मेरे जैसा व्यक्ति शून्य के सन्नाटे में बेडोल हुआ निदेशकीय कुर्सी पर आसीन था।

ऐसे में डॉ. भगवानदास पटेल का आना मेरे लिए 'प्रथम रश्मि का आना' ही रहा। वे कोटड़ा के रास्ते से आये थे जो गुजरात की सीमा से लगा आदिवासी बहुत बसावट लिए अभी भी विकास के लंगड़े पायदान पर ही है। आजादी के अमृत वर्ष में भी वहां कोई 'अ' दिखाई नहीं देगा। डॉ. पटेल के साथ उनके हमझोली सर्वोदय आश्रम के आचार्य तथा शिक्षक डूंगरी भील नवजी थे।

कलामण्डल संग्रहालय में प्रदर्शित भीलों के आदिम नृत्य गवरी से लेकर देश-विदेश की पुतलियों, वाद्ययंत्रों, पट्ट चित्रावली में पाबूजी-देवनारायणजी की जीवनी को दर्शाते फड़ चित्रांकन, रामायण-महाभारत से जुड़े कथानकों को सरजीवित करते काष्ठ-चित्रों की गांव-गांव बंचती कावड़, मोलेला की माटी-कला के मुंह बोलते लोक देव-देवियों के उभरांकन देख आत्ममुग्ध हुए। ये सभी गुजरात की लोकसम्पदा की समृद्ध निधि की भी सुधि में चलते बहुत सारी जानकारी का मैं भी रसायन पाता रहा। नवजी तो इतने भावातुर नवनखोर होते रहे कि कुछ कहते नहीं बनता।

चाय पर हमारी बातों के न जाने कितने पानड़े बंचते रहे। इस मिलणी में भगवान भाई ही धन्य नहीं हुए, मैं भी जैसे कोई दरिद्री यकायक महाधनी हो जाता है, हो गया। मैंने उन्हें अपनी लिखी 'उदयपुर के आदिवासी' पुस्तक भेंट की। एक लेखक जब दूसरे लेखक से मिलता है तो उनकी लिखी पुस्तकों की भेंट-भेंटावण ही उनकी स्थायी स्मृति का लोकर होता है।

मिलने का जोग-संजोग हो तो कोई टाल नहीं सकता। नया वर्ष शुरू होने के दूसरे माह फरवरी 1995 में ही उदयपुर स्थित पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा कर्णाटक के धर्मस्थल में हमारा सामेला हो गया। इधर से मेरे साथ डॉ. पुरुषोत्तम मेनारिया थे और भगवान भाई आदिवासी लोकसाहित्य के समझनहार शंकर भाई तड़की तथा तथा रेखा बेन को लेकर उपस्थित हुए। अन्यों के साथ छतरपुर के बुन्देली लोकविज्ञ डॉ. नर्मदाप्रसाद गुप्त भी हमारे संगी बने। इनसे भी मिलना तो पहलीबार ही हुआ तो ऐसा कि वहां से हमने कन्याकुमारी तक का सफर भी बात में बात, साथ में साथ रहकर कर लिया।

उसके बाद गुप्तजी का मेरा अन्त तक तानाबाना ऐसा बना रहा कि उनके परिवारवालों ने उनकी स्मृति का मुझे सम्मान भी दिया। इस आयोजन का भावभीना समारोह अभी भी मेरी स्मृति में है। वहीं गुप्तजी के साथ महाविद्यालय में अध्यापन कर रहे डॉ. बहादुरसिंह परमार से मेरी जिग्री मुलाकात हुई जो अभी भी लोकसंस्कृति विषयक मेरी जमापूंजी का बधावा दे रही है।

फिर एक और प्रसंग जुड़ा भगवान भाई से भेंट करने का इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र नई दिल्ली में आयोजित लोककला संगोष्ठी में। इसमें विविध प्रान्तों के लोकधर्मी विद्वानों का सान्निध्य अनेक जानकारियों से समृद्ध कर गया। तब डॉ. कपिला वात्स्यायन उसकी अध्यक्ष थीं। समापन समारोह में उनको सुनते हुए बाद में मैंने अपनी आधा दर्जन को पार करती पुस्तकें भेंट कीं। उन्हें कलामण्डल में हम एक संगोष्ठी समारोह में उदयपुर आमंत्रित कर चुके थे। उन्होंने तो मेरी 'संस्कृति के रंग' पुस्तक की भूमिका भी लिखी थी जो 1979 में प्रकाशित हुई। उसके बाद जो समीकरण बदले उसका जिक्र भी मुझे उन्होंने भारी मन से किया था जब वे अचानचक 'ज्यों की त्यों घर दीनी चदरिया' छोड़ वहां का आसन छोड़ने को मजबूर हुई।

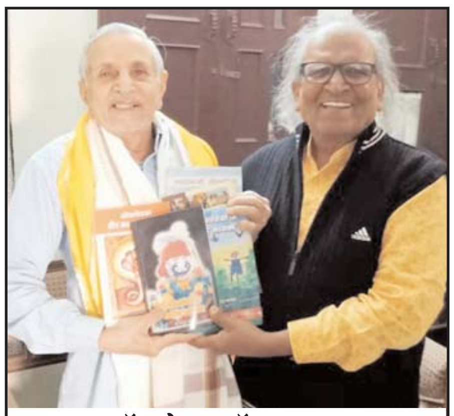
डॉ. पटेल, डॉ. भानावत

इसके बाद गुजरात के ईडर में प्रो. मृदुला पारीक के बुलावे पर वहां के आर्टस् कॉलेज में हमारा जमावड़ा हुआ। इसमें भोपाल से हमारे साथी बसन्त निरगुणे और पाली से डॉ. अर्जुनसिंह शेखावत से भी मंथन हो गया। निरगुणेजी ने वहां की आदिवासी लोककला परिषद में रहते मध्यप्रदेश के आदिवासियों पर अधिकारिक विद्वता हांसिल की तो शेखावतजी ने आदिवासी संस्कृति को सिरे तक पहुंचाकर 'पद्मश्री' का श्रीफल पाया।

यहां भगवान भाई अपने गायक दल के साथ पूरा लवाजमा लेकर प्रस्तुत हुए। उनकी गायक मण्डली से भीली रामायण राम सातमा और भारथ नामधारी महाभारत लोकमहाकाव्यों के उदात्त स्थल सुन पूरा परिसर ही पूरे दो दिन तक गुजराती गायकी का गौरव स्पंदन देता रहा। गुजरांनो अरेलो की तरह राजस्थान में भी बगड़ावत महाभारत का कण्ठासीन आख्यान प्रचलित है। उसमें से 'देवनारायण का भारत' नाम से मेरी पुस्तक कलामण्डल से प्रकाशित हुई। रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत ने भी बगड़ावत नाम से बड़ी प्रामाणिक पुस्तक, पोथा सम्पादित किया जिसके पाठ सम्पादन का दायित्व मुझे दिया। इस कार्य से जुड़ते समय मैंने रानीजी का स्नेहील सान्निध्य पाकर बहुत कुछ सीखा और इस क्षेत्र में और कुछ जिंदादिली से करने की गौरवजनित प्रेरणा भी प्राप्त की।

इन सब महत्त्वपूर्ण प्रसंगों के बाद वह प्रसंग भी सोने में सुहागा बनकर जुड़ा जब पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने भानावत भाई के समग्र कार्य का सटीक मूल्यांकन करते ढाई लाख का कोमल कोठारी पुरस्कार प्रदान किया। उस दिन 21 दिसम्बर 2022 को अहमदाबाद से चलकर अपने होनहार बेटे अमित पटेल के साथ अपनी बांसों उछलती खुशी लेकर सीधे मेरे घर आगये जहां तुक्तक और बहू रंजना ने उनका आत्मीय अभिनन्दन किया।

इन मुलाकातों में गाहे-बगाहे मैं भगवानदासजी के सम्बन्ध में भी उनके लेखकीय मिजाज को लेकर बहुत सारी जानकारी प्राप्त करता रहा। उससे लगा कि बिना किसी पूर्व सोच-समझ से कुछ करने और बनने का सपना लिये एक सामान्य शिक्षक बनते अपने परिवार का गुजरबसर करने वाले ग्राम्यजनों के साथ यहां-वहां की हंसी-ठिठोली करते आदिवासी लेखन के माध्यम से आदिवासी जीवन का कबीर की तरह रेजा बनुते भगवानदास से उठे डॉ. भगवानदास बन गये।

अपनी कथा सुनाते बोले, सन् 1978 की आषाढ़ की एक संध्या को मैं गुजरात के खेड़ब्रह्मा की हरणाव नदी के पुल से गुजर रहा था। पीछे भील युवा-युवती नाचते-गाते आ रहे थे। मैं उनकी बोली तो नहीं समझ पाया पर उस गीत के बोलों ने मुझ में अकथ्य अनुभूतिमय जो उल्लास पैदा किया, मैं निहाल हो गया।

युवक गीत की पंक्ति उच्चरित करता और फिर युवतियां लाक्षणिक लोच-लय के साथ अनुगान करतीं। इस बीच कुछ युवक मुंह पर हाथ रख जो किलकारियां भरते कि मैं अपने को रोक नहीं सका और उनके साथ हो लिया। बार-बार आवर्तित होते गीत की कुछ पंक्तियां मैंने अपने चित्त में बिठालीं। वे थीं- मौँय परणावी दूरा देस, झलुको मेली देझे'ला! अँण झलुके न झलुके पासी आवुं'ला! इसका अर्थ मेरे आदिवासी छात्र जुमाभाई पारधी ने बताया, ''हे गोठिया (प्रेमी)! मेरा विवाह दूर देश करवा दिया गया है किन्तु तेरे बिना वहां मेरा मन नहीं लगता है अत: तुम अपने पास एक आईना रख लेना जिसके ऊपर परावर्तित होते सूरज के प्रकाश के साथ मैं आकर तुझसे मिलकर तेरे में समा सकूं।''

मुझे लगा, ऐसी घटना और अभिनव कल्पना शायद ही किसी साहित्यकार से पढ़ने-सुनने मिली। वे अपने अन्तर्मन को खोल सुनाने में निमग्न होगये। कहने लगे, ऐसा लगा, कॉलेज-काल में जो कुछ पढ़ा उस शिष्ट साहित्य के सातवें पाताल में दबे पड़े लोकसंस्कार पुन: संचरित होकर अभिज्ञ भीली बोली से भिज्ञ होने उस समुदाय से जुड़ गया और अपने आदिवासी छात्रों से भीली बोली सीखना प्रारम्भ कर दिया। जहां चाह वहां राह स्वत: ही खुल पड़ती है। कठिनाइयों से जूझने की हिम्मत और हौसला सबलता के साथ जुड़ जाता है।

उन्हीं दिनों मेरे एक छात्र के निमंत्रण पर 23 किमी दूर नदी पार मुझे सांढुसी गांव जाना था। किनारे पहुंचते नदी का प्रवाह बाढ़ का संकेत दे रहा था। ऐसी विषम स्थिति देख वह छात्र पास के पाथेरा गांव से अपने फुफेरे भाई बुधा बुवड़िया को बुला लाया। उसके कंधे पर चौड़े मुंहवाला मटका तथा हाथ में बांस का डंडा था। मैंने उसमें अपने कपड़े, कॉपी तथा केसेट रिकार्डर रख दिये।

हमारे साथ पांच महुड़ा गांव के धना भाई भी हो लिये। तीनों मटके का मुहाना पकड़ नदी में उतर पड़े। बढ़ते प्रवाह में बुधा भाई हमारी जीवन-नौका का खेवनहार था। अचानक छात्र डाह्या अपने खुले बदन को कुछ छू जाने से भयाक्रांत हो मटके के ऊपर कूद पड़ा जिससे मटका अस्थिर हो गया जैसे हमारे पर मौत मंडराने लगी। धना काका को सद्‌बुद्धि उपजी। उसने शीघ्रता कर बांस का डंडा फटकार डाह्या को अलग कर दिया। किनारे खड़े लुका भाई डाभी नजर पड़ते ही नदी के उफनते प्रवाह में कूदपड़ा और साहपूर्वक हमें मौत के मुंह से निकाला। पहलीबार वहां मुझे लोक के अन्त:सत्व के दर्शन हुए।

अपनी अचरजभरी निगाहों में भगवान भाई द्वारा कथित सारा दृश्य मेरी आंखों में समाविष्ट हो गया जैसे मैं भी लुका भाई को देखता नदी के दूसरे ढावे पर खड़ा हूं। सच में लोक का पेटा कितना बड़ा हेतालू और परजीवी होकर जीता है।

डॉ. पटेल अपने मनोभावों को हंसावली उड़ान देते बोले, यह समुदाय शिष्ट समुदाय से एक मुष्ट ही नहीं, एक हाथ ऊंचा है। अनुभव हुआ कि यह लोक अपेक्षाहीन, स्नेह, ममता और अखूट मानवता का हमदर्दी है। इससे मुझमें यह दृढ़ता जगी कि मेरे शेष जीवन पर आदिवासी लोक का ही अधिकार है। साबरमती के तट पर मेरे बचे जीवन के कार्यक्षेत्र की उपलब्धि हुई। ऐसा मानते मेरा यह दृढ़ विश्वास बना कि 'लोक' में मेरा पुनर्जन्म हुआ है।

लोक की समझ के लिए आप किसको प्राथमिक अनिवार्य मानते हैं? मेरा प्रश्न था।

वे बोले, सभ्रांत अथवा शिष्ट समुदाय ने लोक के जो लक्षण तय किये हैं वे पश्चिम के अंधानुकरण हैं। उन विद्वानों ने फोकलोर को मनुष्य की आदिम अवस्था की अभिव्यक्ति मानते असभ्य एवं जंगली लोगों का अंधविश्वास कहा जो मौखिक साहित्य से पोषण प्राप्त करता है।

लिखित रूप में लोक शब्द भले ही ऋग्वेद के पुरुष सूक्त से प्राप्त हुआ हो किन्तु उसकी जड़ें वेदों से भी बहुत पूर्व पृथ्वी के साथ जुड़ी हुई हैं। उसकी शाखा-प्रशाखाएं दूरदराज के ग्राम नगर वनांचलों तक फैली हुई हैं। वेद में यम-यमी, पुरवा-उर्वशी जैसे संवाद सूक्त और धार्मिक अनुष्ठान लोक से ही प्रविष्ट हुए हैं। गीता में कृष्ण ने 'अतोस्मि लोके वेदे च प्रचति: पुरुषोत्तम' और महाभारत के व्यास ने 'प्रत्यक्षदर्शी लोकानां सर्वदर्शी भवेन्तर:' अर्थात् समग्र विश्व को प्रत्यक्षदर्शी लोक ही हर तरफ से देखनेवाला, कहा है।

लेकिन सच तो यह है कि लोक के अध्ययन के लिए लोकभाषा के साथ हमरस हुए बिना किया गया अध्ययन अनर्थों का उपहास ही सिद्ध होगा। इस परंपरा में जीवन निर्वाह कर रहे समुदाय की बोली का स्वरूप भी उनका अपना होता है जिसे उनसे ही, उनके साथ रहकर समझना होगा। उसे ठीक से समझे बिना कई बार लेने-के-देने पड़ जाकर महान मुसीबत खड़ी हो जाती है।

उदाहरण देते हुए उन्होंने समझाया, एकबार खेड़ब्रह्मा में प्रौढ़ावस्था पार एक भीलनी जलाऊ लकड़ी का गट्ठर बेचने आई। उसे किसी ने डोही अर्थात् बुढ़िया कह दिया। यह सुनते ही वह बुरी तरह गुस्सा होकर बोली, 'हुँ! ला उँ थार होही हुं?' अर्थात् क्यों रे! मैं तुम्हारी पत्नी हूं क्या?

इस अंचल में डेही का अर्थ पति, बावा का अर्थ श्वसुर, दादा का अर्थ देवर तथा सीसो शब्द स्त्री के जनानांग विषयक अश्लील गाली के रूप में प्रयुक्त होता है।

-शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, बुधवार 01 मार्च 2023

सम्पादकीय

होली के रंग हजार

होली की ऋतु अन्य ऋतुओं से भिन्न है। यह ऋतु आकाश पाताल से लेकर जलचर, थलचर के सभी जीवों को प्रभावित करती है इसीलिए अन्य उत्सव-त्यौहार-पर्व के इस अवसर को अलग अन्दाज में देखा जाता है।

मनुष्य कोई अलग प्राणी नहीं है। पंचतत्वों का ही भेलमेल है और इन्हीं की तरह अपनी मनुष्याई पहचान लिये है। परमात्मा ने सबको साख, सीख और समझ दी है इसलिए सबकी प्रकृति एक-दूसरे जीव से भिन्न है पर विलग नहीं है।

सबकी वाणी, व्यवहार, संस्कार और जीवनयापन के तौर-तरीके अपने-अपने व्यवहारी, जमात, कुटुम्ब, समाज के साथ एकमेक हैं। भावना रूप में सबकी समझ और व्यवहार को धीरे-धीरे चाहें तो समझ सकते हैं।

होली पर मानव-मन ही एक नई हवा और प्रकृति के बदले खुशनुमा परिवेश से जुड़कर खुशहाल लगता है। उसके मन में तरह-तरह के भाव, तरंगें, हरकतें और रूप-रस-रंग के ठौड़ नवोन्मेष लिए नवांकुर की तरह प्रस्फुटन देते लगते हैं।

अकेले राजस्थान में ही अलग-अलग अंचलों में वहां का मानव होली को जिस रूप में मनाता है, जो तौर-तरीके अपनाता है, जो प्रदर्शन, स्वांग, खेल, प्रहसन प्रस्तुत कर मनबहलाव करता है, उसका अध्ययन ही अनेक तरह के अजूबे दृश्यों में विश्लेषित कर मनुष्य के बुद्धि-वैभव का और उन्मुक्त लोकाचारों का आकलन करता किं कर्त्तव्य विमूढ़ की स्थिति में आ सकता है।

इस पर्व-उत्सव पर पुरुषों की होली की ठिठोली के साथ बच्चों एवं महिलाओं के जज्बे निराले होते हैं। यह सब सुनने मात्र से नहीं, देखने से भी नहीं, उन रूपांकरों के हिस्से बनने पर ही महसूसा जा सकता है।

तो आइये, इसबार की होली के लिए राजस्थान का प्रजास्थान आपको स्नेहिल-हिलमिल न्यौता देता है। शभम् होली का सबको बंचे जुहार।

शिकागो में होली

विकल्प

शिकागो में परम्परागत होली खेलते हुए विकल्प मेहता, अनिशा जैन, शिवम डूसेजा, करनराज एवं तेजाली। शिकागो में भारतीय समुदाय काफी बहुतायत में है एवं सभी भारतीय मिशिगन झील के किनारे हर साल होली बड़े धूमधाम से मनाते हैं। हर साल भारत से बड़े कलाकार भी इस आयोजन में शामिल होते हैं। यह होली मिलन होली से पूर्व आनेवाले शनिवार को मनाया जाता है।

- विकल्प मेहता

डॉ. विमला भंडारी सम्मानित

उदयपुर (ह.सं.)। सलिला संस्था की अध्यक्ष डॉ. विमला भंडारी को जवाहर कलाकेंद्र, जयपुर में आयोजित समारोह में शिक्षामंत्री डॉ. बुलाकीदास कल्ला द्वारा 'रंग राजस्थान बालसाहित्य पुरस्कार' प्रदान किया गया। डॉ. भंडारी का मंत्रालय की सचिव डॉ. गायत्री राठौड़ ने शॉल एवं मुख्य अतिथि ने सम्मान पट्टिका अर्पित कर अभिनंदन किया। अकादमी के अध्यक्ष इकराम राजस्थानी, सचिव राजेंद्रमोहन शर्मा, कोषाध्यक्ष महेश गुप्ता, उपाध्यक्ष बुलाकी शर्मा, सत्यदेव सवितेंद्र, भगवतीप्रसाद गौतम, ओमप्रकाश भाटिया, गोविंद शर्मा, अंजीव अंजुम आदि को भी सम्मानित किया गया।

अफसरनामा

- क़मर मेवाड़ी -

अफसर का नाम सुनते ही अच्छे-अच्छे तीसमारखां की भी सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाती है और वह बगलें झांकने लगता है, जैसे वह अफसर न होकर किसी थाने का थानेदार हो। वैसे भी अफसर के लिए दफ्तर में कोई काम नहीं होता, सिवाय कागजों पर चिड़िया बिठाने के। अधिक समय तो वह टूर-वूर मारने में ही खर्च करता है, ताकि अफसरी का रोबदाब बना रहे और जेब भी गरम रहे।

अफसर बड़ा जंगी होता है। बड़ा आतंक होता है उसका। दफ्तर में सब उससे डरते हैं। उसका चेहरा सीरियस देख लोगों की धोंकनी तेज हो जाती है। किसी को बार-बार पेशाब उतरता रहता है तो किसी को लगातार प्यास की तलब सताती रहती है। किसी का ब्लडप्रेशर घट-बढ़ जाता है तो किसी का चेहरा इस प्रकार लटक जाता है जैसे अभी-अभी सब्जीमार्केट से किसी बेरहम लैला के हाथ से चप्पलें खाकर लौटा है।

अफसर जबतक दफ्तर में बैठा रहता है, तबतक बाबू लोग भीगी बिल्ली बने अपनी कुर्सी-रूपी चारपाई पर चिपके रहते हैं और उसके दफ्तर छोड़ते ही आवारा साण्ड की तरह चाय नाम के कलयुगी अमृत का पान करने होटलों की ओर परवाज कर जाते हैं। यदि अफसर अपने फेवर का हुआ तो उसकी तारीफ में आसमान के कुलाबे तक मिलाने में नहीं हिचकिचाते और यदि अफसर थोड़ा गुस्सैल या बदमिज़ाज हुआ तो स्साले का सात पुश्तों का कच्चा चिट्ठा बीच चौराहे पर लाकर इस बेशर्मी से खोलेंगे कि आपको लगेगा किसी ने मुर्दाघर का दरवाजा खोल दिया है।

अफसर बड़ा जंगी होता है। बड़ा आतंक होता है उसका। दफ्तर में सब उससे डरते हैं। उसका चेहरा सीरियस देख लोगों की धोंकनी तेज हो जाती है। किसी को बार-बार पेशाब उतरता रहता है तो किसी को लगातार प्यास की तलब सताती रहती है।

किसी का ब्लडप्रेशर घट-बढ़ जाता है तो किसी का चेहरा इस प्रकार लटक जाता है जैसे अभी-अभी सब्जीमार्केट से किसी बेरहम लैला के हाथ से चप्पलें खाकर लौटा है। तात्पर्य यह कि अफसर के सामने सबका जी हलकान बना रहता है। बाबू-तो-बाबू बेचारे संत्री से लेकर मंत्री तक की जान को सांसत में डाल देते हैं ये अफसर लोग। खुदा किसी दुश्मन को भी अफसर के चंगुल में नहीं फंसाए।

पर क्या अफसर के काटे का इलाज नहीं? नहीं है साब। सौ फीसदी है, ऐसे अफसर के काटे का इलाज। जो अफसर दफ्तर के अंदर ज़मीन-आसमान एक करता हुआ बैठा रहता है जैसे अपनी माँद में शेर! वही शेर जब शाम को छुट्टी के बाद घर लौटता है तो घरवाली के सामने गीदड़ बन जाता है। दफ्तर का शेर घरवाली के सामने गीदड़ बना एक याचक की तरह उसके आदेश की पालना में हर वक्त तैयार खड़ा रहता है। कहीं ऐसा न हो कि आज्ञा पालन में थोड़ी कोताही रह जाए और बीबी चण्डी का रूप धारणा करले।

अपने राम ने अफसरों की बीबियों के ऐसे-ऐसे नजारे देखे हैं कि बखान करना शुरू करूं तो आप दांतों तले उंगली चबा डालेंगे। वैसे अफसरों की बीबियाँ भी एक तरह की नहीं होती। कुछ अफसरों की बीबियाँ अपने साहब को उंगलियों पर नचाती रहती हैं और कुछ ऐसी होती हैं कि जिसे जब चाहे उंगली पर नचवा दे। वह जिस चपरासी को अपनी सेवा में चाहे रखले, जिसे चाहे निकलवादे।

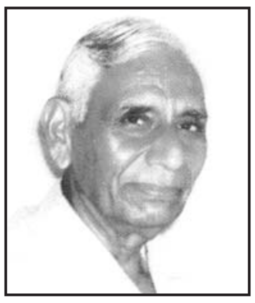

वह इतनी रहमदिल भी होती है कि अपने मिलने वालों को भवन निर्माण के लिए साहब से सिफारिश करके सीमेंट का स्पेशल कोटा एलाट करवा दे और इतनी क्रूर भी होती है कि जो अहलकार उनकी अगवानी में मोटर साइकिल लेकर दो स्टेशन पहले आया हो और साहब को मुबारकबाद देकर उनका चमचा-ए-खास बन गया हो, उसे धक्के देकर क्वार्टर से बाहर निकालदे। किसी के देसी घी के डिब्बे से इतनी महकी हुई हो कि उसका नाम 'एवार्ड' के लिए प्रस्तावित करवादे और अगर किसी से नाराज हो जाए तो उसका किसी जहन्नुम पर ट्रांसफर भी करवादे।

किसी दफ्तर से एक अफसर का तबादला होगया और नए अफसर के नाम का आर्डर आगया तो दफ्तर में खलबली मचगई। क्योंकि वह जो अफसर जारहा था, वह अफसर कम और भटियारा ज्यादा था और आप जानते ही हैं कि भटियारे को सिर्फ भट्टी के जलने की चिंता रहती है, रोटी सिके या जले उसकी बला से ।

ऐसे अफसर के तबादले पर किस-किस का दिल नहीं पसीजा होगा और किस-किस ने रो-रोकर उसके विरह में सौ-सौ आँसू नहीं गिराए होंगे। कोई रोए भी क्यों नहीं, लोगों ने जो मौज-ऐश की, अब क्या नए आनेवाले अफसर के राज में भी हो सकेगी। यह जरूरी तो नहीं कि बार-बार अफसर की जगह कोई भटियारा ही आए। और सच मानिए साहब! इसबार दफ्तर में सही मायने में एक अफसर ही आया। अफसर तो बाद में आया। पहले उसका नाम आया।

नाम के आते ही पूरे दफ्तर में एक भयमिश्रित सन्नाटा व्याप गया। लोग तरह-तरह की अटकलबाजी लगाने में भिड़ गए। कहाँ से आ रहा है? कहाँ का रहने वाला है? किस जाति का है? आदि। सबने अपने-अपने हिसाब से नए आनेवाले अफसर को अपनी बनाई तस्वीर के फ्रेम में फिट कर दिया।

लोग आपस में चर्चा करते रहते - साहब आएँगे तो रहेंगे कहां? अभी तो पुराने वाले ने क्वार्टर भी खाली नहीं किया। खाली कैसे करते, बच्चे जो पढ़ रहे हैं। अजी रहने दो पुराने वाले साहब ही रहेंगे यहाँ। हाँ जी, नया अफसर आना ही नहीं चाहता। ठीक कहा आपने अगर आना होता तो आगया होता अबतक। अगर आ भी गया तो टिक नहीं सकता। जल्दी ही बोरिया बिस्तर गोल करना पड़ेगा। अरे भाई, वह अच्छी पोस्ट पर है उसे छोड़कर क्यों आएगा? हां, सुना तो है सोने का अण्डा देने वाली पोस्ट है उसकी, फिर क्यों आने लगा वह ? आता तो आजाता। अब नहीं आनेवाला वह।

चलो अच्छा है नहीं ही आए। कोई कहता, अरे, देख लेना वह आएगा एक दिन। अफसर की भी यही मंशा है। कहने का मतलब यह कि जितने मुँह उतनी बातें थीं। दफ्तर में सभी इसी तरह की चर्चा में व्यस्त रहते और एक दिन अचानक नया अफसर आगया।

कुछ लोगों में खुशी की लहर दौड़ गई। चलो भटियारे से छुट्टी मिली। सारे दफ्तर को कबाड़खाना बना दिया था स्साले ने!

लेकिन दफ्तर में सन्नाटा व्याप गया। दफ्तर के अधिकांश लोग ऐसे चुपागए मानों उन्हें साँप सूंघ गया हो। जब सबका यह हाल देखा तो कालिया ने अपना काइयांपन उजागर किया, 'स्सालों! डरते क्यों हो? नया अफसर क्या खुदा के घर से आया है? है तो हमारे-तुम्हारे जैसा ही हाड़मांस का आदमी। हाँ, यह जरूर है कि थोड़ा घाघ लग रहा है नया अफसर। अभी मैं उसका अध्ययन कर रहा हूँ। देखना दो-चार दिन में सब ठीक कर दूँगा। मैंने भी अपने बाल धूप में सफेद नहीं किए हैं। दो साल तक मैंने भी अफसरी की है, कोई झक नहीं मारी।

कालिया का शंखनाद सुनकर दफ्तरवालों का तनाव कुछ कम हुआ। उनके प्राण वापस शरीर में लौट आए हैं। सभी के होंठ एक साथ हिले और वे सब एक स्वर में चीख उठे-कालिया साब-ज़िन्दाबाद।

होली के ढूंढ्ये

होली का मुजरा करूं, धरूं ठिठोली माथ।
सुरसत झोली में भरे, दिन दूने सौगात।।
इत उत ढूंढ्यो नँह मिल्यो, कोई नुवो सबूत।
होली रे हत्थे चढ्या, ई ढूंढ्या मजबूत।।
स्वस्थ सुखी काया रहे, मनड़ा मौज करेह।
आतम चेतन बने रहे, मोकळ बरसे मेह।।
खरे मसखरे बन गये, घाट-घाट के ठाठ।
दोनों पाट बरोबर, किसको कौन रहा है चाट।।
राजा रंक समान हैं, कीचड़ कमल धमाल।
गाली लागे सोहनी, सबकी मोटी खाल।।
बनठन कर बड़ बोलते, ठनठनपाल मराल।
ताले बेताले भये, रहे फुलाते गाल।।

राजेन्द्रमोहन भटनागर :

व्हीलचेयर पर विल लिखी, दिल का दर्द छिपाय।
लिखी पुस्तकें छप गईं, लोकार्पण मन भाय।
लिखा नहीं जाता पर लिखने की गुलगुल चलती है।
मीठी खाज लिए लगता, कोई बुलबुल छलती है।।
कुछ भी नहीं रहा फिर भी मन भटक रहा मोहन मेरा।
चमक चाहता देना किन्तु लगता नहीं कहीं डेरा।।

क़मर मेवाड़ी :

आधी सदी का सफर कर, घाट हुआ बेघाट।
अब क्या पूछो लालजी, सम्बोधन के ठाट।।
सम्बोधन के ठाट, बाड़ी में बढ़ती नहीं बेलड़ियां।
खेल्ये कर गये खेल, बिखरती देख रहा हूं लड़ियां।।
आगे क्या, पीछे क्या, कहां-कहां ढूंढू बिलमाया।
बिखर रहे हैं ताश के पत्ते, रत्ती रही न भाया।।

श्रीकृष्ण 'जुगनू' :

अतल पतल के खोज लिए, सब शास्त्र पुराण शिलोक।
होड़ नहीं है, सबका संबल बना हुआ है लोक।।

बना हुआ है लोक, फूंक से उड़ते पत्ते।
जिल्द बिना जैसे दुर्दिन को देख रहे हैं गत्ते।।
कोई विधा, दिशा अधुनातन और पुरातन भव-भव।
यह जुगनू सूरज को लेकर खोल रहा है नित नव।।

दिलीप धींग :

उदियापुर में उदित हुआ, चमका चैन्नई में जाकर।
ताला यहां जड़ा है लेकिन वहां खुल गया है लॉकर।।
मन मां आती मिलने की।
बार-बार बहु खिलने की।।
पुरस्कार सम्मान छोड़ते नहीं, धर्म के हम चाकर।।

किशन दाधीच :

यहां जमा हूं किन्तु बूंदी से उखड़ा नहीं अभी यारों।
एक अकेला अकादमी हूं, दिशा देखता हूं चारों।।
नाम-रूप कुछ तो रसना पर स्वाद लगा रहता है।
दोस्त नहीं, मन खुद ही मेरा भग-भग कर बहता है।।
निर्मोही मैं नहीं किन्तु मित्रों को ठेस लगी है।
मत पूछो अपनी ही चिलम-तमाखु नहीं सगी है।।

देव कोठारी :

राजकाज सब हवा हुए, नहीं रहे कोठार।
कोठारी अस्तित्व में, करते मंगलाचार।।
कला याकि साहित्य संस्कृति धर्म और इतिहास।
सबकी शोभा बन रहे, सबके चर्चित खास।।
देवों में इन्सान और इन्सानों में देव महान।
जीने वाले ही जाते हैं ऐसे बिरलों पर अभिमान।।

रजनी कुलश्रेष्ठ :

एक समय जब ऐसा आता, अपने भी सपने हो जाते।
अपने घर में होने पर भी रहे, ढूंढते मिल नहीं पाते।।
कभी-कभी जीवन जीना भी दुष्कर होता जाता है।
प्रातर्वेला का सुख भी अवसाद लिए दुख लाता है।।
कविता भी तब घने अंधेरे की लगती काली छाया।
माया मोह नहीं रहता और बेबस-सी लगती काया।।

इकबाल सागर :

सागर सूख गया, इक बाल नहीं तिरता दिखता।
छूट गई शायरी, सबद भी नँह इतराता लिखता है।।
मोती महल उदास खड़े हैं, खंडहर बने नमूने।
याद आ रहा भोज प्रतापी, मोती भर-भर दूने।।
स्वतंत्रता का वीर प्रतापी, कहां मिलेगा ऐसा।
टिकिट लगा है, बड़ा तमासा दर्शन का है पैसा।।

जे. के. ओझा :

कुकड़ा बनकर राजघराने की रद्दी को सहजा।
रोड़ी में से रत्न निकाला, गण्या-कबाड़ी घर जा।।
कचरे को कंचन कर-करके अन्य ठिकाने भेजा।
खंडहर को वैभव देता आदि इतिहास सहेजा।
संस्कृति का संरक्षण करते रहते हैं ऐसे ओझा।
बिना पराई फूंक बजाते रहते अपना अलगोजा।।

कुंजन आचार्य :

चेतन में सबही रहते हैं, अवचेतन में कौन?
गूंगे का गुड़ चखने वाले, क्यों रहते हैं मौन?
सृष्टि अलौकिक, दृष्टि अलौकिक कौन जान पाया है?
धन्य वही होता सचमुच जिस पर उसकी छाया है।
माया महा ठगिनी हम जानी कहते रहो भले ही बच्चू।
किन्तु चिपकते वही निरन्तर खाते रहते गच्चू।।

लक्ष्मीनारायण नंदवाना :

एक-एक करके कितने ही, आये थे अध्यक्ष।
अकादमी तो एक थी, और एक था लक्ष्य।।
और एक था लक्ष्य, मुखौटे सबरंग देखे।
याद आ रहे आज सभी के नजरे लेखे।।
मैं नंदवाना एक सेकता सबकी रोटी।
बिन चटनी के स्वाद बढ़ाता देता गोटी।।

महेन्द्र भानावत :

कौन बताओ ऐसा जाया जो भानाजी याद करे।
थोथा बजता रहे भले ही वो फरियाद करे।।
उम्र न देती यश-अपयश करने से होगा काम सखे।
बातें वह जायेंगी तब तक स्मृति में थोथे काम सखे।।
कितने ही आये-गये, कौन किसको करता है याद सखे?
किसकी जेबों में कौन रखे, किसके कैसे अंजाम सखे?

भूपेन्द्र चौबीसा :

खींच रहे हैं छक-छक छकड़ा बिना धार आधार।
जैसे धूल में लट्ठ चलाते धक्का देते कार।।
यह कमाल कोई बाजीगर ही दिखला सकता है।
बिना आग के दूध उफनता क्या हलुआ पकता है?
बिना फूल फल जैसे पत्ता पान का।
अन्यामन्या अखबार उड़ा बेजान का।।

तुक्तक भानावत :

दिनभर रहती चहलपहल सबकी जय बोलो।
बातें करो हजार, राग रंग बेहद घोलो।।
यादों का लेखा अनंत, है कैसे बोलूं।
हर गठरी अनमोल, बिखर जाती जब खोलूं।।
पार्श्वफला साहित्य संस्कृति कला कर्म का।
पुरा खोज इतिहास और अध्यात्म धर्म का।।

शेष विशेष :

एक राम गोपाल हैं, एक राम इकराम।
मानव है कैलाश पर, श्रीकृष्ण किस धाम।।
वेद व्यास रेजा बुनें, नेजा पर शैलेष।
ढूंढ रही शाकुन्तला, निर्गुण हैं किस भेष।।
डाड़म के मिस भटकते, ज्योति लिए राजन्न।
होली-सा रंग दे रहे, पूरन खटके मन्न।।

स्मरण :

उन सबको स्मरणांजलि, कीर्ति शेष हैं आज।
जहां कहीं भी वे बसें, रखें हमारी लाज।।
मालपुआ मावा गया, हुई जलेबी तंग।
बन आया मिरची बड़ा, रह गई लापा लंग।।
सियावर रामचन्द्र की जै।।

प्रस्तुति :- डॉ. तुक्तक भानावत
संप्रति संस्थान के सौजन्य से

पाकिस्तान ए वतन : हाल, बेहाल

- डॉ. वेदप्रताप वैदिक -

पाकिस्तान इस समय दक्षिण एशिया का सबसे गया बीता देश बन गया है। यों तो श्रीलंका, नेपाल, मालदीव और बांग्लादेश की भी हालत अच्छी नहीं है। इन सभी देशों की अर्थ व्यवस्थाएं संकट में हैं लेकिन पाकिस्तान में मंहगाई इस कदर छलांग मार रही है कि आम लोगों का रोजाना का भरण-पोषण भी मुश्किल हो गया है।

पेट्रोल पौने तीन सौ रूपये लीटर, गेहूं सवा सौ रूपये किलो, टमाटर ढाई सौ रूपये किलो और चिकन साढ़े सात सौ रूपये किलो हो गया है। लोग घी-तेल की छीना-झपटी पर उतारू हो गए हैं। सरकार ने अपने लघु बजट में नागरिकों पर तरह-तरह के नए टैक्स ठोक दिए हैं। विदेशी मुद्रा का भण्डार भी लगभग खाली हो गया है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष पाकिस्तान को 1.1 बिलियन डॉलर का कर्ज देने को तैयार है लेकिन उसकी शर्त है कि पाकिस्तान की सरकार पहले अपनी आमदनी बढ़ाये। कर्ज में डूबी सरकार का अब एक ही नारा है- 'मरता, क्या नहीं करता?' वित्तमंत्री इशाक डार ने जो कि मियां नवाज़ शरीफ के समधी हैं, जो अभी पूरक बजट पेश किया है, उसमें 170 बिलियन रूपए के नए टैक्स उगाहने का वादा किया है।

कहना नहीं होगा कि अर्थ-व्यवस्था का ऐसा भयंकर संकट किसी युद्ध की स्थिति से भी बदतर है। राजनीति का हाल भी बिल्कुल बेहाल है। पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान और प्रधानमंत्री शाहबाज शरीफ के बीच तलवारें खिंची हुई हैं। इमरान की गिरफ्तारी की खबर आंधी की तरह लाहौर को घेरे हुए है। इमरान-समर्थक हजारों लोग उनके घर पर जमा हो गए हैं ताकि उन्हें कोई गिरफ्तार न कर सके। सरकार का जितना ध्यान अपने देश की डूबती हुई अर्थ व्यवस्था को उबारने में लगा है, उससे ज्यादा इमरान के साथ दंगल करने में लगा हुआ है।

इससे भी बड़ी चिंता की बात यह है कि इस्लामाबाद को बलूच, पठान और सिंधी लोग घूंसा दिखाने लगे हैं। वे पाकिस्तान से अलग होने का नारा लगाने लगे हैं। जिन तालिबान को टेका देने में पाकिस्तान की फौज ने जमीन-आसमान एक कर दिए थे, वे ही तालिबान अब डूरंड लाइन को खत्म करने की मांग कर रहे हैं। इससे भी ज्यादा खतरनाक बात यह हो रही है कि जिस चीन पर तकिया था, वही अब हवा देने लगा है।

चीन ने अपना वाणिज्य दूतावास बंद कर दिया है। वह अपनी रेशम महापथ योजना के तहत पाकिस्तान में सड़कें, रेल, पाइपलाइन और बंदरगाह बनाने पर लगभग 65 बिलियन डॉलर खर्च कर रहा है लेकिन चीनी कंपनियां कुछ भी माल भेजने के पहले अग्रिम भुगतान की मांग कर रही हैं।

पाकिस्तान के पास पैसे ही नहीं है। वह अग्रिम भुगतान कैसे करे? चीनी नागरिकों की हत्या से भी चीन नाराज है। पाकिस्तान को अन्य मुस्लिम देश भी उबारने के लिए तैयार नहीं हैं। यदि इस मौके पर शाहबाज सरकार में दम हो तो पाक-भारत व्यापार फिर से शुरु करे और मोदी से मदद मांगे तो 'एक पंथ, कई काज' सिद्ध हो सकते हैं।

प्रो. सारंगदेवोत कार्यवाहक अध्यक्ष बने

उदयपुर (ह. सं.)। विद्या प्रचारिणी सभा, भूपाल नोबल्स संस्थान कार्यकारिणी के त्रे-वार्षिक चुनाव में राजस्थान विद्यापीठ विवि के कुलपति प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत कार्यवाहक अध्यक्ष, डॉ. महेन्द्रसिंह आगरिया मंत्री, मोहब्बतसिंह रूपाखेड़ी उपमंत्री एवं प्रबन्ध निदेशक, डॉ. दरियावसिंह तथा डॉ. जब्बरसिंह टाड़ावाला उपाध्यक्ष, राजेन्द्रसिंह ताणा संयुक्त मंत्री, शक्तिसिंह कारोही वित्तमंत्री चुने गये।

कार्यकारिणी सदस्यों में हनुवंतसिंह, नवलसिंह, नकुलसिंह, कमलेश्वरसिंह, भंवरसिंह, सुरेन्द्रप्रतापसिंह, करणसिंह, महेन्द्रसिंह तथा पुष्पेन्द्रसिंह निर्वाचित हुए। भूतपूर्व छात्रसंघ प्रतिनिधि पद पर डॉ. युवराजसिंह, राजेन्द्रसिंह, कुलदीपसिंह एवं महेन्द्रसिंह निर्वाचित हुए। शब्द रंजन की बधाई।

इलेक्ट्रिक एसयूवी नेक्सॉन ईवी 'सबसे तेज' के2के ड्राइव का रिकॉर्ड बनाने के लिये तैयार

उदयपुर (ह. सं.)। भारत की अग्रणी ऑटोमोबाइल निर्माता और भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों के विकास में सबसे आगे रहने वाली टाटा मोटर्स ने यह घोषणा की है कि इसकी इलेक्ट्रिक एसयूवी नेक्सॉन ईवी श्रीनगर से कन्याकुमारी तक की एक चुनौतीपूर्ण यात्रा पर नॉन-स्टॉप ड्राइव पर निकलकर 4000 किलोमीटर का रास्ता तय करेगी और ईवी द्वारा सबसे तेज के2के ड्राइव का रिकॉर्ड बनाएगी। टाटा मोटर्स ने तनाव मुक्त अनुभव के लिये नेक्सॉन ईवी की रेंज को बढ़ाकर 453 किलोमीटर कर दिया है जबकि टाटा पावर ने देशभर में हाइवे चार्जिंग इंफ्रा को व्यवस्थित ढंग से बढ़ाया है ताकि पब्लिक चार्जिंग सब जगह मौजूद हो।

टाटा पैसेंजर इलेक्ट्रिक मोबिलिटी लि. में मार्केटिंग सेल्स और सर्विस स्ट्रैटेजी के हेड विवेक श्रीवत्स ने कहा कि इस यात्रा में नेक्सॉन ईवी मौसम की कठोर परिस्थितियों और भारतीय उपमहाद्वीप के कई सारे कठिन क्षेत्रों से होकर गुजरेगी। इस गतिविधि का लक्ष्य तेज गति और लंबी दूरी वाली यात्रा के प्रबंधन में नेक्सॉन ईवी की क्षमता दिखाना और देशभर में मौजूद पब्लिक चार्जिंग के नेटवर्क पर रोशनी डालना है।

पेप्सी की रणवीरसिंह के साथ ब्लॉकबस्टर गठजोड़ की घोषणा

उदयपुर (ह. सं.)। पेप्सी ने बॉलीवुड सुपरस्टार रणवीरसिंह के साथ एक ऐसे नारे को बुलंद करने का फैसला किया है जो 2023 को नए सिरे से परिभाषित करेगा, और यह नारा है -'राइज़ अप बेबी!' कल्चर क्यूरेटर पेप्सी ने रणवीर सिंह के साथ एक ब्लॉकबस्टर गठजोड़ की घोषणा की और सुपरस्टार का अपने ब्रांड एंबैसडर के रूप में स्वागत किया। भारत के युवाओं द्वारा असली सुपरस्टार के खिताब से नवाजे गए, रणवीर सिंह ने अपने प्रशंसकों को अपने जबरदस्त परफॉर्मेंस, फैशन स्टेटमेंट, संगीत की शुरुआत, या उनके उन्मुक्त-उत्साही व्यक्तित्व के माध्यम से, बार-बार मंत्रमुग्ध किया है। पेप्सी हमेशा से ही युवाओं की आवाज़ का पर्याय रहा है और उन्हें आत्म-अभिव्यक्ति, अभिमान और आत्म-विश्वास के साथ सशक्त बनाने में यकीन करता है। पेप्सी और रणवीर के बीच यह डायनमिक गठजोड़ निश्चित रूप से देश भर के दर्शकों को रोमांचित करेगा।

सौम्या राठौड़, कैटेगरी लीड, पेप्सी कोला, पेप्सिको इंडिया ने कहा कि पेप्सी ऐसा ब्रैंड है जो हमेशा से आज के दौर की युवा पीढ़ी की आवाज़ से आवाज़ मिलाता आया है। हम भारत के युवाओं की बाधाओं के खिलाफ उनकी यात्रा में उनके साथ सबसे आगे खड़े हैं और उन्हें वास्तविक, साहसी और खुद पर यकीन करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

सैवलॉन स्वस्थ इंडिया ने सचिन तेंदुलकर को दुनिया का पहला 'हैंड एम्बैसेडर' बनाया

उदयपुर (ह. सं.)। सैवलॉन स्वस्थ इंडिया मिशन ने एक अनूठा कदम उठाते हुए दुनिया के महान क्रिकेट खिलाड़ियों में से एक सचिन तेंदुलकर को विश्व का पहला 'हैंड एम्बैसेडर' बनाने की घोषणा की है। दुनियाभर में क्रिकेट विश्व में अपने योगदान के लिए मास्टर ब्लास्टर का नाम बहुत सम्मान के साथ लिया जाता है। उन्होंने क्रिकेट इतिहास में कई कीर्तिमान स्थापित करते हुए पीढ़ियों को प्रेरित किया है। अब एक विशेष सरोकार के लिए वह अपने अनमोल हाथों से एक और उपलब्धि हासिल करने जा रहे हैं - सचिन एक हैंड एम्बैसेडर के तौर पर उचित तरीके से हाथ धोने के लिए करोड़ों लोगों को प्रेरित करेंगे।

आईआरसीटीसी और एचडीएफसी बैंक में साझेदारी

उदयपुर (ह. सं.)। इंडियन रेलवे कैटरिंग एंड टूरिज्म कॉरपोरेशन लि. (आईआरसीटीसी) और एचडीएफसी बैंक ने को-ब्रांडेड ट्रेवल क्रेडिट कार्डों में से एक को लॉन्च करने के लिए साझेदारी की घोषणा की। यह आईआरसीटीसी की टिकटिंग वेबसाइट और आईआरसीटीसी रेल कनेक्ट ऐप के माध्यम से बुक किए गए ट्रेन टिकटों की बुकिंग पर विशेष लाभ और अधिकतम बचत प्रदान करेगा। इसके अतिरिक्त, आईआरसीटीसी एचडीएफसी बैंक क्रेडिट कार्डधारकों को आकर्षक ज्वाइनिंग बोनस, बुकिंग पर छूट और देशभर के रेलवे स्टेशनों पर कई कार्यकारी लाउंज तक पहुंच का आनंद मिलेगा। क्रेडिट कार्ड को सुश्री रजनी हसीजा, अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक, आईआरसीटीसी, पराग राव, समूह प्रमुख - पेमेंट्स, कंज्यूमर फाइनेंस, डिजिटल बैंकिंग और आईटी, एचडीएफसी बैंक और सुश्री प्रवीना राय, सीओओ, एनपीसीआई ने लॉन्च किया।

'व्यापार का त्योहार' कार्यक्रम आयोजित

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के घरेलू मार्केटप्लेस फ्लिपकार्ट ने अपने ऑन-ग्राउंड सेलर इवेंट 'व्यापार का त्योहार' का आयोजन जयपुर में विक्रेताओं को कारोबारी विकास के अवसरों के बारे में जागरूक करने के लिए किया। कार्यक्रम में 350 से अधिक विक्रेता जुटे, जिन्हें अपने व्यवसाय के विकास के लिए प्लेटफॉर्म के इनसाइट्स एवं ऑफरिंग्स को समझने का अवसर मिला। फ्लिपकार्ट की लीडरशिप टीम ने जयपुर में सेलर कनेक्ट प्रोग्राम का आयोजन संपन्न कराया और अधिकतम लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम जयपुर, मुंबई, नई दिल्ली, कोलकाता, बेंगलुरु और सूरत जैसे शहरों में ऑन-ग्राउंड सेलर कनेक्ट आयोजनों की श्रृंखला का हिस्सा है। इन सेलर कनेक्ट इवेंट्स का आयोजन 'व्यापार का त्योहार' कार्यक्रम के तहत किया जाता है, जिसका उद्देश्य क्षमतावान विक्रेताओं को बेहतर विकास एवं सफलता प्राप्त करने तथा प्लेटफॉर्म के माध्यम से मिलने वाले अवसरों का लाभ उठाने में सशक्त बनाना है।

नवलखा महल में पहलीबार दृश्य माध्यम से वैदिक शिक्षाओं का प्रसार गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने किया 3 नव-निर्मित खंडों का लोकार्पण

उदयपुर (ह. सं.)। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में गुजरात के राज्यपाल महामहिम आचार्य देवव्रत ने नवलखा महल परिसर में तीन नव-निर्मित खंडों का लोकार्पण किया। इस अवसर पर जेबीएम ग्रुप के चेयरमैन एस. के. आर्य, श्रीमद दयानंद सत्यार्थ प्रकाश ट्रस्ट के अध्यक्ष अशोक आर्य उपस्थित थे।

राज्यपाल ने कहा कि मेरे लिए यह अत्यन्त सौभाग्य का विषय है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की पुण्य तपस्थली नवलखा महल में श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास द्वारा नवनिर्मित नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र जनता को समर्पण के लिए तैयार किए नए प्रकल्प आर्यावर्त चित्रदीर्घा, मिनी थियेटर, वैदिक संस्कार वीथिका के लोकार्पण समरोह में आने का अवसर प्राप्त हुआ। नवलखा महल वह पवित्र कर्मस्थली है जहां महर्षि दयानन्द सरस्वती ने साढ़े छह माह विराजकर सत्यार्थ प्रकाश का प्रणयन किया। महर्षि दयानन्द ने वैदिक संस्कृति के पुनर्जागरण के लिए क्रांतिकारी प्रयास किए। उनके प्रयासों से तत्कालीन कुरीतियों बाल विवाह, सती प्रथा, बालिका शिक्षा, विधवा विवाह, छूआछूत उन्मूलन इत्यादि के निवारण को नई दिशा मिली। नवलखा महल 1993 में आर्य समाज को प्राप्त हुआ। इस जीर्ण-शीर्ण भवन को सुन्दर बनाने/पुनरुद्धार के लिए न्यास के संस्थापक व आजीवन अध्यक्ष स्वामी तत्वबोध सरस्वती ने उस समय एक करोड़ रु. दान की आहुति दी। इसके लिए इतिहास में उनका नाम अमर हो गया है। यहां भव्य यज्ञशाला का निर्माण किया गया। आर्य जगत् के भामाशाह महाशय धर्मपाल एमडीएच मसाले वालों ने अपनी दान सरिता से माता लीलावन्ती वैदिक संस्कृति सभागार का निर्माण करवाया।

एस. के. आर्य ने कहा कि नवलखा भवन वास्तुशिल्प की दृष्टि से भव्य स्थल है और यहां अब विश्व में पहली बार वैदिक उद्धरणों/परिच्छेदों को दृश्य रूप में प्रदर्शित किया गया है, ताकि आम जनता के लिए वेदों में निहित संदेशों एवं शिक्षाओं को समझना आसान हो। यहां भगवान राम और कृष्ण के जीवन तथा साधु-संतों की जीवन-गाथाओं को भी भव्य तैल-चित्रों में प्रदर्शित किया गया है।

अशोक आर्य ने 365 स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन को प्रदर्शित करने वाली दीर्घा की जानकारी देते हुए बताया कि ये सभी सेनानी भारत के अलग-अलग भागों से थे। कोई महाराष्ट्र से तो कोई बंगाल, ओडिशा, असम और पंजाब से था। हमने इन अनाम सेनानियों के जीवन और देश के स्वतंत्रता-संग्राम में उनके निरूस्वार्थ योगदान को यहां प्रदर्शित किया है।

ट्रस्ट ने नवलखा महल को एक संग्रहालय एवं प्रेरक केंद्र में बदलने में अग्रणी भूमिका निभायी। इसके जीर्णोद्वार कार्य के दौरान, कुछ नई परियोजनाओं जैसे कि एक मिनी थियेटर, एक सांस्कृतिक दीर्घा और एक प्रेरकस्थल का भी निर्माण किया गया। सभी बाहरी दीवारों पर आकर्षक चित्रों को उकेरा गया है साथ ही, महर्षि अग्नि, वायु, आदित्य एवं अंगिरा ऋषि की आदमकद प्रतिमाओं को भी लगाया गया है।

जिला कलक्टर मीणा सम्मानित

उदयपुर (सुजस)। राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड संस्था के जगतपुरा स्थित राज्य प्रशिक्षण केन्द्र में 22 फरवरी को आयोजित

राज्य स्तरीय समारोह में राज्यपाल कलराज मिश्र से उदयपुर जिला कलक्टर ताराचंद मीणा को धन्यवाद बेज से सम्मानित किया।

राज्यपाल ने हाल ही में पाली के रोहट में आयोजित 18वीं राष्ट्रीय स्काउट गाइड जंबूरी में विशेष योगदान के लिए उदयपुर जिला कलक्टर ताराचंद मीणा को धन्यवाद बैज से सम्मानित किया गया और अतिथियों ने उनके प्रयासों की सराहना करते हुए उन्हें बधाई दी। समारोह में शिक्षा मंत्री बी.डी. कल्ला ने मेडल पहनाया। इस अवसर पर राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष जस्टिस गोपालकृष्ण व्यास, स्टेट चीफ कमिश्नर निरंजन आर्य, भारतीय स्टेट बैंक के मुख्य महाप्रबंधक राजेश मिश्रा सहित राज्य सरकार के अधिकारीगण, स्काउट-गाइड संस्था के पदाधिकारी और सदस्य उपस्थित रहे।

उल्लेखनीय है कि जिला कलक्टर मीणा ने जिले से इस जंबूरी में सर्वाधिक स्काउट्स गाइड्स की सहभागिता, कमजोर आय वर्ग के स्काउट्स गाइड्स यूनिटों को आर्थिक सहायता, उदयपुर से जंबूरी एवं वापसी के लिए निशुल्क परिवहन व्यवस्था, जंबूरी आयोजन व्यवस्थाओं में आतिथ्य सत्कार हेतु माकूल व्यवस्थाओं में अपना उल्लेखनीय योगदान दिया।

डॉ. सरीन का पोस्टर विमोचित

उदयपुर (ह. सं.)। गांधीनगर गुजरात में आयोजित 30वीं अंतर्राष्ट्रीय पीडियाट्रिक कांफ्रेंस के

उद्घाटन समारोह में गीतांजली मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के बाल व शिशु रोग विभागाध्यक्ष डॉ. देवेन्द्र सरीन द्वारा रचित 'चाइल्ड लेबर ए कर्स ओन ह्यूमैनिटी' थीम पर आधारित पोस्टर का विमोचन किया गया। समारोह में डॉ. बकुल पारीक, डॉ. केंज्वेकर, डॉ. बसव राजा, डॉ. दिनेश कुमार मौजूद थे।

इस पोस्टर में डॉ सरीन ने यह दर्शाया कि भारत में व्याप्त बाल श्रम उन्मूलन नष्ट किया जा सकता है। इसके लिए समाज में विभिन्न स्तर पर जागरूकता होना अति आवश्यक है। पोस्टर को तैयार करने में डॉ. लाखन पोसवाल, डॉ. सुशील गुप्ता, डॉ. बकुल पारीक, डॉ. विवासन पारीक, डॉ. शैली शर्मा ने सहयोग दिया। इसके अलावा डॉ. सरीन ने अस्थमा के उन्मूलन व उपचार के लिए गोष्ठी का प्रतिनिधित्व करते हुए कहा कि अस्थमा प्रदुषण का मुख्य कारण है। अत: वातावरण को प्रदुषित होने से रोकने का प्रयास होना चाहिए। कांफ्रेंस में बाल चिकित्सा विभाग के रेजिडेंट डॉ. हर्ष ने पोस्टर प्रेजेंटेशन दिया। कांफ्रेंस में देश-विदेश के दस हजार से अधिक डेलीगेट्स ने भाग लिया।

उदयपुर मीडिया अवार्ड 2023 का रंगारंग आयोजन

पत्रकारिता की चुनौतियों का एकजुट होकर करें सामना : डॉ. गुप्ता

उदयपुर (ह. सं.)। पत्रकारों की सबसे बड़ी चुनौती है आने वाली तकनीकी। आर्टिफिशियल इंटलिजेंस (एआई) जैसी तकनीकी से पत्रकारिता के एक नये दौर की शुरूआत होगी। ऐसे में पत्रकार को हर मोर्चे पर सफल होना है तो

उसके लिए खुद को अपडेट्स करना बेहद जरूरी है। पत्रकारों को नई तकनीक के साथ काम करते हुए आगे बढ़ना होगा। यह बात इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए) के उदयपुर चेप्टर के अध्यक्ष एवं अरावली ग्रुप के निदेशक डॉ. आनंद गुप्ता ने कही। वे अरावली फाउंडेशन, लेकसिटी प्रेस क्लब व जार के साझे में रविवार 19 फरवरी को भैरव बाग में आयोजित उदयपुर मीडिया अवार्ड 2023 में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे।

डॉ. गुप्ता ने शहर के सभी पत्रकारों को एकजुट होकर एक बैनर के नीचे खड़े रहने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि पत्रकारों के हित में संगठनों को भी चाहिए कि वे समय-समय पर पत्रकारों को अपडेट्स करने के लिए प्रयास करते रहें जैसे कि भाषा, तकनीकी और अन्य नवाचार।

लेकसिटी प्रेस क्लब के अध्यक्ष कपिल श्रीमाली ने कहा कि डॉ. आनंद गुप्ता की सोच हमेशा से पत्रकारों को प्रोत्साहन करने वाली रही है और आज उस सोच का ही परिणाम है कि एक बेहतरीन कार्यक्रम आयोजित हो रहा है। उन्होंने कहा कि कार्यक्रम में उदयपुर मीडिया जगत की उन हस्तियों का सम्मान हुआ है जो शहर की पत्रकारिता में नींव के पत्थर हैं।

जार के जिलाध्यक्ष अजय आचार्य ने कहा कि नवोदित पत्रकार वरिष्ठ पत्रकारों के कार्यों से प्रेरणा लेकर नये आयाम स्थापित कर सकते हैं। जार के महासचिव अल्पेश लोढ़ा ने बताया कि समारोह में अलग-अलग तीन केटेगरी में पत्रकारिता से जुड़ी हुई 53 हस्तियां को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अंत में वरिष्ठ पत्रकार डॉ. रवि शर्मा ने फिल्मी गीत प्रस्तुत किया। संचालन श्रीमती रागिनी पानेरी ने किया।

इनका हुआ सम्मान :

वरिष्ठ पत्रकार : डॉ. महेंद्र भानावत, विष्णु शर्मा 'हितैषी', लोकेशकुमार आचार्य, शैलेश व्यास, डॉ. उग्रसेन राव, संजय गौतम, राजेंद्र हिलोरिया, शांतिलाल सिरोया, सनत जोशी, प्रकाश शर्मा, रफीक पठान, प्रमोद श्रीवास्तव, मुनेश अरोरा, ऋतुराज, मनीष जोशी।

चयनित सक्रिय पत्रकारों में आनंद शर्मा, कमल वसीटा, प्रकाश मेघवाल, कृतिका चौबीसा, अख्तर हुसैन, अब्बास रिजवी , शंकर सरगरा, प्रमोद गौड़, महावीर व्यास, अभिषेक जोशी, गिरिराज सारस्वत, अली असगर, संजय खोखावत, निशा राठौड़, शोभालाल जाट, राजेश कसेरा, भूपेन्द्र चूण्डावत, रवि मल्होत्रा, कपिल पारीक, देवेंद्र शर्मा, सतीश शर्मा, सुनील पंडित, संजय व्यास, सोहेल, क्लॉड डिसूजा, अनिल जैन, नितेश गर्ग, श्रीमती भावना व्यास, विपिन सौलंकी, के साथ डॉ. कुंजन आचार्य, पंकज शर्मा, प्रतापसिंह राठौड़, कमलेश शर्मा, प्रवेश परदेशी का शॉल, स्मृतिचिन्ह एवं प्रमाणपत्र प्रदान कर सम्मान किया गया।

लो कि होली आगई

- डॉ. पूरन सहगल -

लो कि होली आगई, कुछ कीजिये।
रंग में रंग जाइये, रंग दीजिये।।
मस्त महुआ, दहकता है टेसुआ।
आम बौराया, न जाने क्या हुआ।
पीपली और नीम की कोंपल उगी,
केतकी के गाल को, किसने छुआ?
कौन सा संदेश है, सुन लीजिये।
कौन सा संकेत है, गुन लीजिये।।
गुलबदन सी होगई, सारी धरा।
तितलियों, भंवरों से, हर उपवन भरा।
मन हुआ राधा, बना है श्याम तन,
किसने किसका तन लुभाया, मन हरा।
आप भी कुछ बोलिए, कह दीजिये।
अमित रस में आप भी तो भीजिये।।
हर गली में हैं, चंदोवे सज रहे।
बाँसुरी, मांदल, मंजीरे बज रहे।
कौन लेता है, ये फगुनाई अलाप,
घुंघरू किस पाँव में सजधज रहे।
गाइये ना नाचिये, सुन लीजिये।
हो सके तो एक स्वर दे दीजिये।।
अब न अपनों में परायापन रहे।
और सपनों में कुछ अनबन रहे।
अब न तरसे प्यार को कोई कहीं,
अब न रीते प्यार से तन-मन रहे।
उम्र का संकोच अब मत कीजिये।
इस हथेली पर ही चुंबन दीजिये।।

उफनती नदी में.......

(पृष्ठ तीन का शेष)

मेरा प्रश्न था- इतने वर्षों में अपने कार्यक्षेत्र से आपको क्या उपलब्धि हुई?

वे तपाक से बोले, अनेक लोगों ने अनेकबार मेरे सिर पर हाथ रख मुझे आशीर्वाद देते दिल खोलकर मुझे सहयोग किया है जो मेरे लिए अद्भुत और अकल्पनीय ही है। इनमें डुंगरी भीलों में प्रचलित नव लाख देवियों से संबंधित अरेला, अरवल्ली लोक की वही, भील लोक महाकाव्य राठोर वारता, तोली राणी नी वारता, खूतांनो राजवी देवोल गुजरण, राम सीता नी वारता, भीलोनुं भारथ, लीला मोरिया, फूलरांनी लाडी तथा अनेक उत्सवों के गीतों के संग्रह अध्ययन, सम्पादन एवं प्रकाशन का अध्येता बना।

इस सामग्री के लिए कोटड़ा, जोटासण, मचकोड़ा, धामणवास, पंथाल, सांढुसी, बहेडिया, खेड़वा, झांझवा, दिग्थली जैसे अनेक गांवों की यात्रा कर रूपा भाई, गमार भाई, नानजी भाई, नाथा भाई, जीवा भाई, वजा भाई और उनके द्वारा अनेक भाई-बेनों का सहयोग पाकर ही मैं एक साधारण अध्यापक से डॉ. भगवानदास बन सका।

लोक और आंचलिकता के महत्त्व को प्रतिपादित करते दो महाकाव्य हमारे आदर्श हैं। उनमें एक रामचरित मानस है जिसके माध्यम से तुलसी ने राम को ठेठ ग्रामीण जन तक पहुंचाया। राम वहां इतने लोकप्रिय बने कि मृतक को श्मशान ले जाते समय भी 'राम नाम सत्त है' कहा जाता है। पद्मावत भी ऐसा ही कालजयी महाकाव्य है। अर्थशास्त्र में चाणक्य ने यहां तक लिखा कि यदि राजा को शास्त्र ज्ञान हो और लोक का ज्ञान न हो तो वह राजा भी मूर्ख जैसा है। रस शास्त्रज्ञ अभिनव गुप्त का कथन है कि जो कुछ लोक में विद्यमान है, शास्त्र में उसका परिष्कार होता है। निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि कालजयी रचना के लिए लोकांचल का गहन अध्ययन अति आवश्यक है।

इस क्षेत्र में काम करने की संभावना आप किस रूप में लेते हैं, पूछने पर उनका जवाब था-

राजस्थान की बात करते हैं तो वहां के ग्राम्य तथा आदिवासी क्षेत्रों में घूम-घूम लोकसाहित्य, लोककला और लोकसंस्कृति को लेकर सर्वाधिक काम आप स्वयं ने 'न भूतो न भविष्यति' कर दिखाया है जो मेरे इस विधान का भी गवाह है। आपकी संस्था भारतीय लोककला मण्डल और आप द्वारा सम्पादित पत्र 'रंगायन' लोकविधा एवं साहित्य का प्रचार-प्रसार करने में अग्रणी भूमिका लिए रहा।

मध्यप्रदेश के बारे में सोचते हैं तो वहां की आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी में बसंत निरगुणे, डॉ. कपिल तिवारी, धर्मेन्द्र पारे एवं अशोक मिश्र ने बड़ा काम किया। 'चौमासा' पत्र के माध्यम से अन्य प्रांतों के अनेक विद्वानों को जोड़ा।

गुजरात में हमारे पुरोधा झवेरचंद मेघाणी ने ग्राम्यजनों के बीच कार्य कर अनेकों को इस क्षेत्र में काम करने की प्रेरणा दी। जोरावरसिंह यादव और मैंने यह कार्य किया। अब नये जो आ रहे हैं उनके लिए वैश्वीकरण के प्रभाव से कुछ बचा ही नहीं है।

लेकिन मैंने जो ऋतुचक्र तथा जीवनचक्र से संबंधित जितनी भी विविध सामग्री एकत्र हुई उनके 1500 ओडियो, 15 विडियो केसेट तथा 50 पुस्तकें तैयार हुईं फिर मैं विदेश चला गया। लौटा तो बहेडिया गांव के जीवा भाई झाला भाई जिनसे मैंने एक महाकाव्य भी लिखा, का निधन हो गया। वे ही अंतिम बुजुर्ग थे। उनके पास जो विपुल गान उनके कंठों में था वह सब कुछ उनके साथ सदैव के लिए दफन हो गया।

यह अफसोस ही है कि हर युग का समय अपने ढंग का अलग से अपनी भूमिका लिए होता है। यह निराश होने की स्थिति नहीं है किन्तु तब भी जिन लोगों ने अपनी मुट्ठी में अपने रंग-ढंग से समय को संवारा है उन्हें विपरीत भावानुभव से गुजरते देख गम्भीर चिन्तन से गुजरना स्वाभाविक लगता है। ऐसे समय में जो लोग अपने प्राणप्रण से जैसी भी स्थिति है, उसमें रम रहे हैं उनके लिए ये पंक्तियां मुझे बार-बार याद आती हैं-

निर्वासित थे राम, राज्य था कानन में भी।
सच ही है श्रीमान्, भोगते सुख वन में भी।।

फार्म : 4
(नियम 8 देखिये)

1.	प्रकाशक का स्थान	:	उदयपुर
2.	प्रकाशन की अवधि	:	पाक्षिक
3.	मुद्रक का नाम	:	लोकेश कुमार आचार्य
	(क्या भारतीय नागरिक है)	:	हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	नहीं
	पता	:	मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस, 311 ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर
4.	प्रकाशक का नाम	:	डॉ. तुक्तक भानावत
	(क्या भारतीय नागरिक है)	:	हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	नहीं
	पता	:	352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर
5.	सम्पादक का नाम	:	रंजना भानावत
	(क्या भारतीय नागरिक है)	:	हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	नहीं
	पता	:	352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हों	:	डॉ. तुक्तक भानावत 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर

मैं डॉ. तुक्तक भानावत एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

उदयपुर
दिनांक : 28.2.2023

डॉ. तुक्तक भानावत
प्रकाशक के हस्ताक्षर

भाषा बिन गूंगा देश और हमारा प्रदेश

- पद्मश्री डॉ. अर्जुनसिंह शेखावत -

किसी भी प्रदेश की पहचान मायड़ भाषा से होती है। भाषा के साथ हमारा इतिहास, साहित्य तथा संस्कृति गूंथी हुई है। भाषा समाप्त हुई तो सब कुछ समाप्त हो जायेगा। भाषा हमारी पहचान और विरासत है। भारत को अंग्रेजों ने शस्त्रों से नहीं भाषा से जीता। स्वतंत्रता के पूर्व 1944 में दिनाजपुर (अब बांगलादेश) में रामदेव चौखाणी ने राजस्थानी हेतु सम्मेलन किया। इसमें ठाकुर रामसिंह तंवर ने प्रभावशाली भाषण देते कहा कि बांग्ला से राजस्थानी अधिक समृद्ध है।

सन् 1914 में टैगोर को जब गीतांजलि पर नोबल पुरस्कार मिला तब उन्होंने राजस्थानी को बांग्ला से श्रेष्ठ बताया फिर जब संविधान बना तब राजस्थानी 8वीं सूची में थी परन्तु गांधी-नेहरू ने जयनारायण व्यास को बुलाकर समझाया कि राजस्थानी को हिन्दी में जोड़दें तो संख्या बढ़ जायेगी और हिन्दी राष्ट्रभाषा बन जायेगी। कहते तो यह भी हैं कि जयनारायण व्यास को मुख्यमंत्री बनाने का लालच भी दिया।

उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने राज्यसभा में डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी को राजस्थानी को मान्यता हेतु विश्वास दिलाया। जसवंतसिंह जसोल ने राजस्थान के समस्त सांसदों से लिखित सर्वसम्मति दी। 25 अगस्त 1903 को विधानसभा ने सर्वसम्मत संकल्प प्रस्ताव पास कर केन्द्र को भेजा परन्तु ग्यारह स्मरण पत्र के बाद भी परिणाम वही ढाक के तीन पात।

जिस राजस्थानी को 500 साल तक मुगल (1526-1707) और 200 साल तक अंग्रेज (1707-1947) समाप्त नहीं कर सके, उसे हमारी सरकार अब तक उपेक्षित किये है। यूनेस्को की जनगणना अनुसार दुनिया में 7000 भाषाएं है, जिनमें आदिवासियों एवं घुमंतु जातियों की भाषाएं शामिल नहीं है और 300 भाषाओं का गलाघोंट दिया या आत्महत्या करने को मजबूर किया गया। यही स्थिति आज राजस्थानी भाषा की हो रही है।

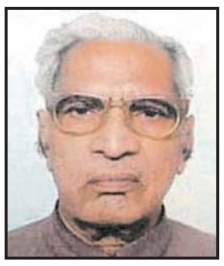

विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध भाषाओं में राजस्थानी का शब्दकोश सबसे बड़ा है जो तीन लाख दस हजार शब्द लिए है। इसे सीताराम लालस ने तैयार किया है।

14वीं सदी में जर्मन भाषाशास्त्री केलिंग ने राजस्थानी (डिंगल) का व्याकरण लिखा। 1916 में इटली के भाषाविद तोस्सीतीरी ने, 1947 में सुनीतकुमार चाटुर्ज्या ने तथा 1990 में शिकागो के बहल ने राजस्थानी का व्याकरण लिखा। राजस्थानी में तीन हजार पुस्तकें प्रकाशित तथा दो लाख अप्रकाशित प्राचीन पांडुलिपियां है। अनेकों विदेशी इन पर शोध करने आते रहते हैं। इसका प्राचीन नाम मरूभाषा, डिंगल आदि भी था। राजस्थानी भाषा का भारत में सातवां और दुनिया में 13 वां स्थान है। भाषा वह जिसका साहित्य, व्याकरण, शब्दकोस तथा लिपि हो। भारत में 234 भाषाएं और 700 बोलियां है।

मायड़ भाषा की नासमझ से हुए अनर्थों की घटनाएं भी कम हास्यास्पद नहीं है। उदाहरणार्थ जैसलमेर की ओर ऊंट के टोडिये को सलवार कहते है। उसे कोई चुरा लेगया। कोर्ट तक केस पहुंचा। न्यायमूर्ति बंगाली व वकील दक्षिण का था। दोनों सलवार का अर्थ औरतों के पहिनने की सलवार समझ रहे थे। देवासी की भाषा नहीं समझ पाने से उसे हार का मुख देखना पड़ा। ऐसे ही शहर के डॉक्टर का गांव में स्थानान्तरण हो गया। एक बीमार आया। बोला- म्हारे अडीठ व्हैईग्यो। गबीड़ काई है? दूसरा बोला- म्हारे सुणपा चालै। सालीका चालै। डोकरी बोली- म्हारी बहू रो पग भारी है। उल्टियां व्है। अर्थ नहीं समझने के कारण तीनों बेहाल होगये।

भारत सरकार की 1963 की जनगणना के अनुसार सिंधी भाषाभाषी 13,71,932 थे। इसी प्रकार नेपाली के 10,21,102 और राजस्थानी के 1,00,00,000 एक करोड़ (सर्वाधिक) अब दस करोड़ है। फिर भी इन भाषाओं को आठवीं सूची में जोड़ दिया है पर राजस्थानी को नहीं जोड़ा बल्कि 1961 की जनगणना से नाम ही हटा दिया और हिन्दी में जोड़ दिया गया। क्या यह सरकार की हठधर्मिता नहीं है। जिस भाषा की जितनी अधिक बोलियां होंगी उतनी ही वह भाषा समृद्ध होगी।

अन्य प्रांतों में वहां के लोकसेवा आयोग में वहां की मातृभाषा का सौ नम्बर का एक अनिवार्य पेपर है। राजस्थान के छात्र वहां की परीक्षा में नहीं बैठ सकते। कारण कि वे वहां की भाषा नहीं जानते परन्तु अन्य प्रदेशों के विद्यार्थी राजस्थान लोकसेवा आयोग की परीक्षा में बैठ सकते हैं। यहां राजस्थानी का पेपर नहीं है अतः बाहर के लोग चयनित हो जाते हैं और हमारे यहां के रह जाते हैं।

संविधान के दूसरे अध्याय अनुच्छेद 145 के अनुसार विधानसभा जनभाषा का उपयोग कर सकती है। शिकवा-शिकायत मायड़ भाषा में लिख कर दे सकते हैं। अध्यक्ष चाहे तो मातृभाषा में बोलने की छूट दे सकते हैं। राष्ट्रपति प्रदेश की जनभाषा को राजभाषा घोषित करने हेतु राज्य सरकार को निर्देश दे सकते हैं। गवाहों के बयान तथा वकीलों की बहस मायड़ भाषा में कर सकते है। फिर कोर्ट प्रक्रिया में उसका अनुवाद अंग्रेजी में कर सकते हैं।

यह विडम्बना ही है कि राजस्थानी में भाषण देकर चुनाव जीतते हैं पर विधायकों को शपथ नही लेने दी जाती। राष्ट्रभाषा हमारी एक आँख है तो मातृभाषा दूसरी आंख और संस्कृत तीसरी।

सन् 1926 में बांग्ला भाषा के लिये वहां के शिक्षकों तथा विद्यार्थियों ने जोरदार आंदोलन किया था। चार विद्यार्थी शहीद हुए। वह दिन 21 फरवरी 1926 था अतः यह दिन अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

आजादी के अमृत महोत्सव तक भी हम अपने राष्ट्र को बेजुबाव रखने का गौरव लिए न उसे उसकी वाणी राष्ट्रभाषा दे सके और न अपने शूरवीर राज्य को राजभाषा ही। ऐसी स्थिति में चुल्लू भर पानी में डूब मरने की स्थिति भी क्या शेष रह गई है?

- लेखक के संपर्क नं. 7597846103

होली के चालीस दिन : अलग अलग गिन

- डॉ. श्री कृष्ण 'जुगनू' -

भारतीय पर्वों की विरासत इतनी समृद्ध है कि एक-एक पर्व पर पन्ने पर पन्ने जड़े जा सकते हैं। होली चालीसी दिन का पर्व है पर हर दिन के अपने ठाठ बाट और आनंद का जयनाद है। भारत है ऐसा जहां पर्व क्या मानो परंपराओं के पर्वत हों ! हर छोर पर अपना जोर और हर कोने में अपने उल्लास सलोने!

उत्सवों के कारण ही हमने भारतवर्ष को उत्सवधर्मी धाम कहा है। सात वार में नौ त्यौहार की गणना की और बरस के तीन सौ पैंसठ दिनों में डेढ़ हजार पर्व गिने! आजकल चलाए जा रहे अलग से !

होली अपने आपमें सैकड़ों प्रकार से मनाई जाती है। हर अंचल की अपनी होली। पिचकारी से रंग बौछार से लेकर पत्थरमार तक। गायन, वादन, नर्तन की होली। लोक ही नहीं, शास्त्र की अपनी होली। जनजातियों से लेकर अभिजात्यों तक के अपने विधि - विधान। कितने रंग और ढंग!

होली धरम, चरम और परम!

होली पर रंग और गाली गायन :

होली के अनेक गीत गाए और सुनाए जाते हैं। हुरियारों के अपने रामा और कबीरा हैं। उनका अपना वंशीवारा और बावरा रावरा है -

हेली ! हरि खेलत रंग होली।
रंग गुलाल चौब अगरचा, उड़त चोहट्टे ओली।।
बनमाली फूलन तन मन में,
लसत चंद्रिका मोली।
मीरां के प्रभु मनभावत,
गावत पुनि चांचर टोली।।

वृन्दावन की तरह मेवाड़ में भी सब देवालयों में होली गाई और प्रभु मूरत रंग भीगोई जाती है। जगदीश से लेकर नाथद्वारा तक ढप सारंगी तार पर फागुन राग आलाप होता है -

फागुन में रसिया घर बारी फागुन में ।
हो हो बोले गलियन डोले,
गारी दे दे मत वारी ।।
लाजधरी छपरन के ऊपर,
आप भये हैं अधिकारी ।
पुरुषोत्तमप्रभु की छबि निरखत,
ग्वाल करे किलकारी।।

गायन में कौन पीछे रहे। जिसे टोका जाए, उसे कौन रोकने आए -

आज बृज में होली रे रसिया।
होरी रे रसिया, बरजोरी रे रसिया॥
अपने अपने घर से निकसी,
कोई श्यामल कोई गोरी रे रसिया।
कौन गांव के कुंवर कन्हिया,
कौन गांव राधा गोरी रे रसिया।
नन्द गांव के कुंवर कन्हिया,
बरसाने की राधा गोरी रे रसिया...।

कीर्तन में भी होरी का रंग साग में छौंक की तरह मिलता है। राग बिलावल का यह पद वसंत वेला की परतें खोलता लगता है -

बरसाने की गोपी मागन फगुवा आई।
कियो हे जुहार नंदजुको भीतर भवन बुलाई।।
एक नाचत एक गावत एक बजावत तारी।
काहे मोहन राय दूरि रहे मैयाय दिवावत गारी।।
आदर देत व्रजरानी अब निज भागि हमारे।
प्रीतम सजन कुलवधू पाये दरस तुम्हारे।।
सुने कुंवरि मेरी राधे अबही जिन मुख मांडो।
जेंवत श्याम सखन संग जिन पिचकाई छांडो।।
केसरि बहोत अरगजा कित मोहन पर डारो।
सीत लगे कोमल तन तुमही चित्त विचारो।।

कल थी, आज है, कल होगी :

सच में जैसी थी, वैसी ही आज है, जरा भी नहीं बदली होली! बिल्कुल नहीं, है जी! हां जी! बड़ा अनूठा पर्व है = होली! धूल से लेकर फूल तक और पानी से लेकर गाली तक! शास्त्रों ने भी खुलकर लोक परम्परा को लिखा है हां, गाली माहात्म्य भी! रंग में गुड़ मिली गलियां भी शास्त्रीय हो गई।

होली युग - युगीन और राग - रंगीन है। होली की अनेक युगों की यात्रा है। कार्तिक और चैत्र से नव संवत् के आरम्भ होने के पीछे लौ एक कारक है। दिवाली पर दीपक की लौ और फाल्गुनी पर होली की लौ! रंग यूं ही नहीं उड़ने लगा ! चंग यूं ही नहीं बजा! गायों की क्रीडा और गोधूलि कैसे धुलंडी हो गई।

पूतना - राक्षसी या चेचक :

होली के दिनों में पहले बच्चों को चेचक हुआ करती थी। अब तो चेचक का उन्मूलन हो गया मगर खसरा के नाम से कहीं कहीं आज भी ऐसा सुना जाता है। बहुत भंयकर व्याधि थी। आंखें चली जाती, चेहरे वीभत्स हो जाते। लोग आज तो वह कहावत भूल गए हैं जबकि कहते थे - है तो वह चांद का टुकडा, मगर चांद के साथ तारे हैं। यानी मुंह पर चेचक के वण हैं।

चेचक को ही पूतना कहा गया है। मगर, हम यही जानते हैं कि कंस के राज में भगवान् कृष्ण को मारने के लिए पूतना पठाई गई थी और उसने जब दूध पिलाया तो कृष्ण ने उसका वध कर डाला.... इस कहानी को कितना रस ले लेकर सुनाया जाता है, कोई ये नहीं कहता कि कृष्ण ने इस बीमारी के उन्मूलन का प्रयास किया। हरिवंश, विष्णुपुराण आदि के आधार पर यही वर्णन भागवत में भी लिया गया है। आश्चर्य है कि यह एकमात्र बीमारी है जो कृष्ण को हुई थी, मगर उस पर उन्होंने विजय पा ली थी। इसको बीमारी के रूप में लिखा ही नहीं गया।

शायद यह पहला संदर्भ है जबकि चेचक के उन्मूलन का प्रयास हुआ हो, मगर इससे पहले रावण के राज में भी पूतना का प्रकोप था। रावण के नाम से जो आयुर्वेदिक ग्रंथ मिलते हैं, उनमें पूतना के प्रकोप पर शमन के उपाय लिखे गए हैं। यानी रावण के राज में इस बीमारी के शमन पर पूरा जोर दिया जाता था ताकि बच्चे स्वस्थ, मस्त और प्रशस्त रहें तो देश का भविष्य ठीक रहेगा। आयुर्वेद के कोई भी प्राचीन ग्रंथ उठाइये, पूतना के उपाय लिखे मिल जाएंगे।

कई नामों और भेदों वाली होती थी पूतना। दो चार नाम तो मुझे भी याद आ रहे हैं जिनको हम बचपन में पहचाना करते थे - बडी माता, छोटी माता, बोदरी माता, सौकमाता, अवणमाता, झरणमाता, मोतीरा वगैरह। इन सब को लक्षणों के अनुसार पहचाना जाता था। मंदोदरी ने रावण से कहा था कि ये मातृकाएं बालकों को अपनी चपेट में ले लेती है। नन्दना, सुनन्दा, कंटपूतना, शकुनिका पूतना, अर्यका, भूसूतिका पूतना, शुष्करेवती वगैरह। रावण ने तब कहा -

तृतीय दिवसे मासे वर्षे वा गृहणाति पूतना नाम
मातृका तया गृहीतमात्रेण प्रथमं भवति ज्वरः।
गात्रमुद्वेजयति स्तन्यं ऊर्ध्वं निरीक्षते।
(रावणसंहिता, बाल औषधि विधान)

वास्तु के लिए 81 या 64 पद का आधार तैयार होता है, उसमें पिलीपिच्छा, चरकी, अर्यमा, पापाराक्षसी, विदारिका, स्कंद, जृम्भा और पूतना को गृहयोजना के बाहर ही रखकर पूजन किया जाता है। सभी वास्तु ग्रंथों में उसका जिक्र आया है। वास्तु पद न्यास में उसको भूलाया नहीं जाता ताकि घर में रहने वालों को कभी ये बीमारी नहीं हो। इसको लाल रंग के भात से पूजा करके मनाया जाता है। क्यों, इसलिए कि उसके प्रकोप के दौरान लाल चावल ही कभी खाए जाते थे। वे सब बातें हम सब भूल गए।

रही बात पूतना की, वह हमें सिर्फ इसलिए याद है कि उसको कृष्ण ने मारा था। केवल एक कहानी की शक्ल में। और, उसकी तस्वीरें, मूर्तियां, चित्र आदि भी इस प्रसंग को जीवंत बनाए रखते हैं। कभी कभी प्रसंग के पार जाकर भी हम नए सत्य पर विचार कर सकते हैं।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।